–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
नवम्बर, 2003 वर्ष 2 अंक 9

ऐ इर्मान वालो तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जैसा कि तुम से पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था ताकि तुम संयमी बन जाओ (अलबक़र ; 183)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

- तिल्कल एय्याम - यह दिन
- कुर्आन की शिक्षा
- कुर्आन की
- प्यारे नबी की प्यारी बातें
- इस्लाम एक परिचय
- दअ़वते इस्लामी के मैदान में
- बच्चियों की तालीम व तर्बियत
- सुल्तानों की न्यायप्रियता
- आप की समस्याएं और उनका हल
- मुनाजात
- जिन्नात का परिचय
- क्या आप अपने कम्प्यूटर से भयभीत हैं
- आलमगीर के युग में
- रोज़े की नीयत
- २११६ई० में महा प्रलय
- परामश प्रस्तुत है
- एक हो जायें तो बन सकते हैं .....
- रोज़ा का उद्देश्य
- ह़ज़रत दाऊद और ह़ज़रत सुलैमान अ़०
- तरावीह़ की रकअ़ते

सम्पादकीय.....3
मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
माहिरुल कादिरी 5
मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी 7
मौ०सईदुर्रहमान आज़मी 11
ख़ैरुन्निसा बेहतर 13
डॉ० मु० इज्तिबा नदवी 15
मु० सरवर नदवी फारूकी 17
मौलाना मुहम्मद सानी ह़सनी..... 18
अबू मर्गूब 20
सुहैब अरशद कुरैशी 21
आमिना उस्मानी 23
इदारा 27
सै०मुहम्मद सलीम 28
सग़ीरा बानो 29
हैदर अली नदवी..... 30
मौ० सै०अबुल हसन अली नदवी.....32
आसिफ अंज़ार 37
इदारा 39

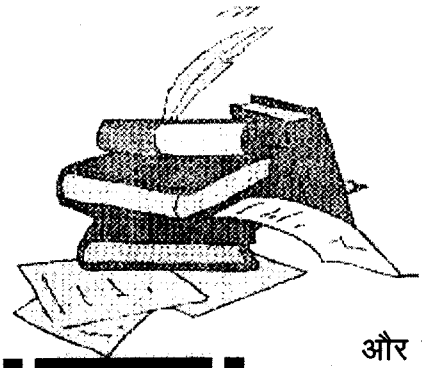

तिलकल् अय्याम (यह दिन)

—डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

और यह दिन हम लोगों के बीच अदलते बदलते रहते हैं। (३:१४०)

एक फ़लसफ़ी ने अपनी घड़ी के डाइल पर लिखवा रखा था : "यह समय भी न रहेगा।". उर्दू का एक कवि कहता है –

सुकूं मुहाल है कुदरत के कारख़ाने में सबात इक तग़य्युर को है ज़माने में।।

अर्थात ईश्वर की सृष्टि में स्थिरता असम्भव है। हर वस्तु हर समय बदलती रहती है। अतः हम कह सकते कि जो वस्तु हर समय तथा हर काल में पाई जाती है वह यही बदलाव है।

यों तो अनस्तित्व से जब कोई वस्तु अस्तित्व में आती है तो तुरन्त यह निर्णय हो जाता है कि इस का अनिस्तत्व भी अनिवार्य है। इसी प्रकार जब कोई जीव जीवन पाता है तो तुरन्त समझ में आजाता है कि एक दिन इस का मरना आवश्यक है। ऐसे ही कोई व्यक्ति जब सत्ता में आता है तो निश्चय हो जाता है कि एक दिन इसको सत्ताहीन होना है।

यह मानव बड़ा बलिष्ठ है अन्यथा हर इतिहास पढ़ने वाला सन्यास ले लेता। इतिहास से ज्ञात होता है कि कितने सत्ताधारी मर कर नहीं जीवित ही सत्ताहीन कर दिये गये तथा कितने राजा रंक हो गये। कहते हैं कभी भारत में राम राज था उसी समय में रावन का भी प्रताप था। था तो वह श्रीलंका में पर पूरा भारत उसके तेज से कांपता था। वह मानव रहा हो या दानव एक दिन उसका तेज भी मिट्टी में मिल कर रहा। फिर लम्बे समय तक भारत में राम शासन रहा पर बड़े दुख की बात है कि उस राम राज में भी सीता जी जैसी सतवन्ती को सुख न मिल सका। ऐसा क्यों हुआ इस भेद को अल्लाह (परमात्मा) ही जाने। हम तो यहां केवल इतनी बात कहना चाहते हैं कि एक दिन वह आया कि न राम राज रहा न दुखी सीता रहीं।

कौरों और पांडव कितने प्रसिद्ध हैं। उसी समय राजा कंस था श्री कृष्ण थे। कंस का अंत हुआ। महा भारत का महायुद्ध हुआ। लेकिन एक समय आया कि न कौरों रहे न पांडव। कृष्ण राज भी समाप्त हुआ। यह तो अपने भारत की उस समय की बातें हैं जब इतिहास लिखने का रिवाज न था, यह बातें हमको धार्मिक पुस्तकों से ज्ञात हुईं। जब से इतिहास लिखा जाने लगा उस समय से इतिहास पर दृष्टि डालें तो मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है। न दारा रहा न सिकन्दर। एक बुढ़िया की कुटिया की ख़ातिर राज महल टेढ़ा कर लेने वाला न्यायी नौशेरवां भी न रहा और ईशभक्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डलवाने वाला अत्याचारी नम्रूद भी न रहा। न बनी इस्राईल के बच्चों का बध करने वाला तथा मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल का पीछा करने वाला ईश शत्रु फ़िरऔन रहा न उसका सहयोगी तथा मंत्री महापापी हामान रहा, न चालीस खच्चरों पर लदने वाली कुंजियों के ख़ज़ाने का मालिक महा कंजूस क़ारून रहा न दुन्या ही में बाग़े इरम नाम से जन्नत बनाने वाला घमंडी शद्दाद रहा। न खुदा के पैगम्बर दाऊद अ़लैहिस्सलाम का न्याय पूर्ण शासन रहा न मानव, दानव जिन्न, शैतान पशु पक्षी सब पर राज करने वाले सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का राज रहा, न दुन्या को राहत देने वाले यूसुफ अ़लैहिस्सलाम

का शासन रहा न जगत के लिये करूणा पात्र मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही का शासन रहा, न फ़क़ीरी में शाही करने वाले, अल्लाह के नबी के वास्तविक उत्तराधिकारियों की ख़िलाफ़ते राशिदा रही, न अमीर मुआ़विया (रज़ि०) की ईश स्वीकृत बादशाही रही, न उमर बिन अ़ब्दुल्ल अज़ीज़ की आदर्श ख़िलाफ़त रही, न बनू उमय्या की मूलूकियत (साम्राज्यवाद) रही, न बनू अ़ब्बास का सफ़्फ़ाह (रक्तपाती) रहा न ख़लीफ़ा हारून रशीद स्वर्णयुगी रहा, न सलजूकी रहे न उस्मानी, न कमाल पाशा अतातुर्क रहा न जमाल अ़ब्दुन्नासिर, न शरअ़ी शासन स्थापित करने वाले तालिबान रहे न अ़रब क़ौमियत की दावत देने वाले सद्दाम।

अपने भारत में आइये। कहां गये मंगोलियन ? कहां है मगध राज्य ? नन्द वंश का क्या हुआ? मौरिया कुल किधर गया? गुप्त वंश भी न रहा और उसका सुप्रसिद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भी न रहा, न अत्याचारी हुन रहे न महादानी हर्शवर्धन रहे, न गूजरों का राज रहा न राजपूतों की सत्ता रही। मुस्लिम काल में आइये तो कैसे कैसे इस धरती में समा गये। शमसुद्दीन इलतमिश, गयासुद्दीन बलबन, अलाउद्दीन ख़िलजी फीरोज़ तुग़लक़, इब्राहीम लोदी आदि। आखिर यह शासक कहां गये? कहां गई बाबर की वीरता, हुमायूं की बुद्धिमानी, अकबर की राजनीति जहांगीर का न्याय, शाह जहां की निर्माण प्रियता, औरंगजेब की शासन व्यवस्था ? किसी का कहीं कुछ पता नहीं।

स्वतंत्रता का सिपाही मुगल ताजदार बहादुरशाह जफर किस विवशता से रंगून की हिरासत में प्राण तजता है। उस शासन को भी हमारा देश छोड़ना पड़ता है जिसके राज में सूर्यास्त नहीं होता था। स्वतंत्रता दिलाने वाले, देश बापू महात्मा गांधी को भी एक दुष्ट की गोली खाना पड़ती है। शांति सन्देष्टा पंडित जवाहर लाल नेहरू का भी अन्त होता है। कितने योग्य सज्जन, प्रधानमंत्री की गद्दी पर बैठे, कितने ज्ञानी देश के राष्ट्रपति बने परन्तु आज वह अपनी गद्दी पर दिखाई नहीं देते।

जमीने चमन गुल खिलाती है क्या क्या
बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे
न गोरे सिकन्दर न है क़ब्रेदारा
मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे

इसी पर शैख़ सअ़दी ने कहा है –

मुकुन तक्या बर मुल्को जाहो हशम
कि पेशज़ तो हम बूदो बअ़दज़ तो हम

अर्थात राज वैभवता तथा सेवकों की अधिकता पर भरोसा मत करो कि तुम से पहले भी यह सब कुछ था और तुम्हारे बाद भी रहेगा और इनका उलट फेर चलता रहेगा।

किसी देश को देखते हुए समझ में आता है कि यह तो उसी प्रकार चल रहा है जैसे चल रहा था। परन्तु कोई देश क्या यह समस्त संसार ही एक दिन न रहेगा तो क्या उसके आंतरिक में ठहराव है, नहीं नहीं निरन्तर बदलाव, क्या रूस में वही सत्ता है जो पचास वर्ष पहले थी। क्या अमरीका में वही शासन है जो हीरोशीमा और नागासाकी को नष्ट करने के समय था ? कदापि नहीं।

हमारे उत्तर प्रदेश में कितने मुख्यमंत्री आए और गए। एक से अधिक बार मायावती जी सिंहासन आरूढ़ हुई और उतरीं। हमारे मुलायम जी भी एक से अधिक बार मुख्यमंत्री बने ? जिस समय कोई सत्ता पर होता है तो उस को इसका तो विश्वास रहता है कि हमारी यह सत्ता अस्थाई

(शेष पृष्ठ १४ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

पवित्र तथा स्वच्छ रहना :

और अगर तुम नापाक हो तो नहा कर पाक हो। (अलमाइदा : ६)

पाक और साफ़ रहना बड़ी ज़रूरी चीज़ है। दीन की जड़ पाकी ही पर है। एक बार रसूलुल्लाहि सल्लल्लालहु अ़लैहि व सल्लम किसी क़ब्र के पास से गुज़रे तो फ़रमाया कि यह पेशाब की छींटों से बचता न था। ह़ज़रत उस्मान (रज़ि०) को पाकी का इतना ध्यान था कि जब से इस्लाम लाए आ़म तौर से एक बार रोज़ाना नहाते थे।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब कोई शख़्स सो कर उठे तो जब तक तीन बार हाथ न धो ले उसको पानी के बरतन में हाथ नहीं डालना चाहिए क्योंकि सोते में उस का हाथ पता नहीं कहां कहां पड़ा है।

दान्तों की सफ़ाई के लिए फ़रमाया, अगर मेरी उम्मत पर बोझ न होता तो हर नमाज़ के वक्त मिस्वाक (दातून) करने को अनिवार्य कर देता।

सार्वजनिक रास्तों तथा वृक्षों के नीचे पाखाना पेशाब नहीं करना चाहिए।

इस्तिंजा (गंदगी धोने का काम) बाएं हाथ से करना चाहिए और पानी से पहले मिट्टी या पत्थर के टुकड़ों से भी साफ़ करना चाहिए फिर पानी से धोना चाहिए।

हफते में एक दिन हर मुसलमान के लिए नहाना, कपड़े बदलना सुगन्ध (खुशबू) लगाना अच्छा समझा गया है। कुछ लोग इसे अनिवार्य समझते हैं।

वस्त्र (लिबास)

हमने उतारा तुम पर वस्त्र जो ढांके तुम्हारे छुपाने के अंगों को और जो शोभा की सामग्री है। (अअ़राफ़ : २६)

शरीर को गर्मी और सर्दी के कष्टों से बचाया जाए।

इन्सान के बदन के जिन अंगों पर नज़र नहीं पड़ना चाहिए वह छुपे रहें। मर्दों के लिए नाफ़(नाभि) से लेकर घुटनों तक का भाग तथा औरतों के लिए सिर के बालों से लेकर पैर के टखनों और हाथ के गट्टों तक का भाग छुपाने वाला भाग है। अर्थात इन भागों का दूसरों के सामने खोलना जाइज़ (वैध) नहीं है। अकेले में भी खोलना, अच्छा नहीं है। एक सह़ाबी ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अगर हम अकेले हों, कोई दूसरा देखने वाला न हो तो? फ़रमाया खुदा तो देखता है, उससे तो और अधिक शर्म करना चाहिए। ह़दीस में है कि आप ने फ़रमाया कभी नंगे न हो इस लिए कि तुम्हारे साथ फ़िरिश्ते रहते हैं जो नंगे होने के समय तुम से अलग हो जाते हैं। उनसे शर्म करो और उनका लिह़ाज़ करो।

मर्दों को किसी ज़रूरत और मजबूरी के बिना केवल रेशम का बुना हुआ वस्त्र न पहनना चाहिए।

मर्दों के लिए औ़रतों का वस्त्र और औ़रतों के लिए मर्दों का वस्त्र पहनना जाइज़ नहीं।

मर्द को पैजामा की मोरियों और तहबन्द को इतना नीचा न करना चाहिए कि टखने छुप जायें अलबत्ता औरतें दामन या पैजामे का घेर नीचे तक लटका सकती हैं।

ऐसा बारीक कपड़ा न पहनना चाहिए जिससे छुपाने वाले अंग दिखाई दें। औ़रतों के लिए विशेषकर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कितनी कपड़े पहनने वालियां हैं जो वास्तव में नंगी रहती हैं।

मर्द भड़कीले रंग विशेषकर लाल रंग के कपड़े न पहनें, लाल धारी के कपड़े पहनना जाइज़ है।

मर्दों के लिए हुजूर ने सफेद रंग के कपड़े पसन्द फरमाए हैं।

आस्तीन वाला वस्त्र पहनते समय पहले दाहने हाथ में आस्तीन डालना चाहिए। नया वस्त्र पहनते समय हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह दुआ़ पढ़ा करते थे।

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़क़नीहि मिन ग़ैरि ह़ौलिम्मिन्नी व कुव्वतिन्

उस खुदा की प्रशंसा जिस ने यह मुझे पहनाया और उसे प्रदान किया मेरी शक्ति या बल के बिना। (केवल अपनी कृपा से)

अगर किसी शरअ़ी कारण से रोज़ा ना रख सको तो छुप कर खाओ पियो।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

इन्सान के हर जोड़ पर सदक़: वाजिब है –

१७४. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया हर रोज़ सूरज निकलने के बाद इन्सान के हर जोड़ पर एक सदक: वाजिब होता है अगर वह दो आदमियों के बीच सुलह करा देता है यह भी सदक़: है, सवारी पर सवार होने में आदमी की मदद कर देता है या उसका सामान उठा कर उसे दे देता है यह भी सदक: है भली बात कहना यह भी सदक: है हर क़दम जो नमाज़ के लिए उठाता है यह भी सदक: है, रास्ते से तकलीफ़दे चीज़ को हटाना यह भी सदक: है।

(बुखारी, मुस्लिम)

सुलह की खुसूसियत –

१७५. हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्त उक़ब: बिन अबू मुऐत से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया दो आदमियों के दर्मियान सुलह कराने वाला झूठा नहीं वह नेक काम करता है और भली बात कहता है। (बुखारी, मुस्लिम)

हजरत हसन (रजि०) के सुलह कराने की पेशीनगोई

१७६. हज़रत अबू बक्र (रजि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि सल्ल० को देखा आप (सल्ल०) मेम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे, और बगल में हज़रत हसन (रजि०) थे आप कभी लोगों की ओर मुतवज्जेह होते कभी हज़रत हसन (रजि०) की ओर, और फ़रमाया कि मेरा यह बेटा सरदार है शायद अल्लाह तआला इसके ज़रिये से दो बड़ी जमाअ़तों में सुलह करा दे।

(बुखारी)

आपस का बिगाड़ दीन को बरबाद कर देता है –

हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम को रोज:, नमाज़, सदक: से अफ़ज़ल काम न बताऊं हज़रात सहाबा ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी ज़रूर फ़रमाएं आप ने फ़रमाया "आपस में सुलह कराना (इस लिए कि) आपस का बिगाड़ा दीन को बरबाद कर देता है। अबू दाऊद

चुगुल ख़ोर के लिए चेतावनी (वअ़ीद)–

१७८. हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, चुगुलख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। एक रिवायत है कि चुपके से लोगों की बात सुनकर चुग़ली करने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

(बुखारी, मुस्लिम)

पेशाब के छींटों से न बचने और चुगुलख़ोरी करने का अ़ज़ाब –

१७९. हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० दो क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन को अ़ज़ाब हो रहा था आप ने फ़रमाया इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़ी बात के बारे में अ़ज़ाब नहीं हो रहा है, क्यों नहीं वह बड़ी बात है उनमें से एक तो चुगली किया करता था और दूसरा पेशाब की छींटों से एहतियात नहीं करता था।

(बुखारी, मुस्लिम)

अफ़ज़ल अ़मल –

१८०. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० से रिवायत है कि मैंने हुजूर सल्ल० से पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी अल्लाह तआ़ला को कौन सा अ़मल ज़ियादा पसंद है ? आप सल्ल० ने फ़रमाया, नमाज़ का उसके वक्त पर अदा करना, फिर मैंने पूछा उसके बाद अल्लाह तआ़ला को कौन सा अ़मल ज़ियादा पसंद है ? आप ने फ़रमाया वालिदैन के साथ अच्छा व्यवहार, मैंने अ़र्ज़ किया उसके बाद अल्लाह तआ़ला को कौन सा अ़मल ज़ियादा पसंद है? आप (सल्ल.) ने फ़रमाया ख़ुदा की राह में जिहाद करना (बुखारी, मुस्लिम)

मां का हक़ सबसे ज़ियादा है–

१८१. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख्स हुजूर सल्ल० के पास आया फिर उसने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी (सल्ल०) मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़ियादा हक़दार कौन है ? आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारी मां उसने अ़र्ज़ किया फिर कौन? आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारी मां उसने फिर अ़र्ज़ किया फिर कौन ? आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारी मां, फिर उसने पूछा उसके बाद कौन? आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारा बाप।

(बुखारी, मुस्लिम)

(शेष पृष्ठ १० पर)

इस्लाम एक परिचय

मौ० सैयद अबुल हसन अ़ली नदवी

बच्चों के नामकरण की बात चल रही है –

दुन्या के तमाम इस्लामी मुल्कों के मुसलमानों के अधिकांश वह नाम हैं जो "अ़ब्द" (भक्त) के शब्द से प्रारम्भ होते हैं जैसे अ़ब्दुल्ला अ़ब्दुर्रहमान, अब्दुलवाहिद, अब्दुल अहद, अब्दुस्समद, अब्दुल अ़ज़ीज़, अब्दुल माजिद, अब्दुल मजीद आदि। यह भी आवश्यक है कि नाम से शिर्क घमण्ड या अवज्ञापालन की अभिव्यक्ति न हो, इसलिए मालिकुल मुलूक और शहंशाह के शब्द के नाम नापसंद किये गये हैं।

मुसलमान बरकत के लिये नेकनामी के लिए नबियों और सहाबियों के नामों को प्राथमिकता देते हैं। इस सिलसिले में स्वाभाविक रूप से मुसलमानों का ध्यान सबसे पहले अपने पैगम्बर, उनके साथियों और उनके परिवार के आदरणीय व्यक्तियों की ओर जाता है।

नामों के सिलसिले में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० का नस्ली सम्बन्ध इस्माईली शाखा से है और बनी इस्राईल और बनी इस्माईल (अ़रबों और यहूदियों) के मध्य विरोध प्रारम्भ से ही चला आ रहा है लेकिन चूंकि मुसलमानों के अ़क़ीदे में ख़ुदा के सभी पैग़म्बर श्रद्धेय हैं और उन पर ईमान लाना जरूरी है, चाहे वह इस्माईली शाखा में हुए हों अथवा इस्राईली शाखा में। इसलिए मुसलमान नामों के बारे में नस्ली पक्षपात का शिकार नहीं।

इसी का नतीजा है कि अकेले हिन्दुस्तान में लाखों की संख्या में ऐसे मुसलमान होंगे जिनका नाम इसहाक़ और उनकी औलाद के नामों पर रखा जाता है और वह इसहाक़, याकूब, यूसुफ़, दाऊद, सुलेमान, मूसा, हारून, ईसा, इमरान ज़करीया और यहया कहलाते हैं, और यह सब इस्राईली शाखा से सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार औरतों में मर्यम, और आसिया नाम पाये जाते हैं। जो इस्राईली शाखा की बुजुर्ग औरतों के नाम हैं।

पाकी और तहारत की शिक्षा

बच्चा जब कुछ सयाना हो जाता है और कुछ समझने बूझने लगता है तो उसको तहारत की तालीम दी जाती है। (अर्थात पेशाब, पाख़ाना, के बाद पानी से पाकी हासिल करने की तालीम) नापाक चीज़ों से बचने और शरीर व कपड़ों को नापाकी से बचाने के निर्देश दिये जाते हैं। ज़ाहिर है कि बच्चा इस बारे में पूरे तौर पर एहतियात नहीं कर सकता। और इसमें माहौल, शिक्षा–दीक्षा, पारिवारिक परिवेश और पेशे को भी बहुत कुछ दख़्ल है, लेकिन फिर भी दीनदार मां बाप इस बात पर ध्यान देते हैं और देना चाहिए।

नमाज़ पढ़ने की हिदायत

इस अवस्था में बच्चे को वुज़ू करना भी सिखा दिया जाता है और नमाज़ का भी शौक़ दिलाया जाता है। बाप या खानदान के बुजुर्ग बच्चे को अकसर अपने साथ मस्जिद ले जाते हैं और वह अपने बड़ों और मुहल्ले वालों के साथ खड़ा होकर नमाज़ की नक़्ल करने लगता है। हदीस में आता है कि बच्चा जब सात वर्ष का हो जाय तो नमाज़ की ताकीद करो जब दस वर्ष का हो तो मार कर नमाज पढ़ाओ, और उनके बिस्तर अलग कर दो।

इस्लामी शिष्टाचार की शिक्षा दीक्षा

इसी अवस्था में दीन दार मां–बाप और पढ़ी लिखी मांए बच्चे को इस्लामी अदब की शिक्षा देती हैं जैसे सब अच्छे काम (खाना खाना, पानी पीना, मुसाफः करना आदि) दाएं हाथ से किये जाएं और शौच आदि बाएं हाथ से। पानी बैठकर और तीन सांस में पिया जायें, बड़ों को सलाम किया जायें, छींक आने पर "अल्हम्दु लिल्लाह" (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है) कहा जाये, खाना बिस्मिल्लाह कह कर शुरू किया जाये और खा चुकने पर हम्दु व शुक्र किया जाये। इसी अवस्था में उसको कुरआन की छोटी–छोटी सूरतें और प्रतिदिन की दुआ़एं याद कराई जाती हैं। खुदा के पैगम्बर और भक्तों के ऐसे हालात बयान किये और सुनाये जाते हैं जिस से उसके विश्वास परिपक्व, दुरुस्त और विचार नेक और अच्छे बनें और बच्चा उनको अनुकरणीय समझने लगे।

बालिग़ होने के साथ, जिसके लिए पन्द्रह वर्ष की आयु काफी समझी जाती है, बच्चे पर नमाज़, रोज़ा ओर ख़ास शर्तों के साथ ज़कात और हज फ़र्ज़ हो जाते हैं और इनको छोड़ने पर

वह गुनाहगार ठहरता है। अब ह़लाल, ह़राम, सवाब व अ़ज़ाब का क़ानून उस पर जारी हो जाता है।

प्रौढ़ावस्था से मौत तक निकाह़ (शादी)

इस्लाम में निकाह़ (शादी) का आयोजन बहुत सादा और संक्षिप्त है। इसको जीवन का एक फ़र्ज़, फितरत का एक तक़ाज़ा और एक अ़िबादत की ह़ैसियत से अदा किया जाता है। केवल ईजाब और कबूल के दो शब्द और दो गवाह इसके लिए ज़रूरी हैं। इसका उद्देश्य यह है कि, यह सम्बन्ध जो दो समझदार बालिग़ लोगों के बीच हो रहा है, आपराधिक और गोपनीय ढंग से चोरी छिपे नहीं हैं। इसीलिए (अनावश्यक अनिवार्यताओं से बचते हुए) किसी कदर एलान, व तशहीर के साथ इसका होना जरूरी है और इसके लिए गवाह अनिवार्य हैं। मर्द, महर अदा करना जरूरी समझें, और औरत की ह़िफ़ाज़त व अ़िज़्ज़त और नान व नफ्के की ज़िम्मेदारी लें। इसके सिवा और कोई चीज़ ज़रूरी नहीं।

इस्लाम के इतिहास में ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं कि बावजूद इसके ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल० के ज़माने में मदीने के मुसलमानों की संख्या बहुत कम और मदीने की जनसंख्या बहुत सीमित थी, बअ़ज़ ऐसे सह़ाबी जो मक्के से हिजरत करके आये थे और जिनके पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल० से बहुत गहरे और पारिवारिक सम्बन्ध थे, ने मदीने में शादी की और स्वयं पैगम्बर ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल० को (जिनका सम्मिलित होना बरकत और अ़िज़्ज़त दोनों का कारण बनता) निकाहोत्सव में आमंत्रित करने की ज़रूरत नहीं समझी। और ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल० को उन सह़ाबी के निकाह़ का ज्ञान निकाह़ हो जाने के बाद वह भी संयोगवश हुआ।

निकाह़ का ज़ियादा सह़ीह़ तरीका यह है कि लड़की का बाप या कोई दूसरा वली निकाह पढ़ाये, इसलिए कि ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ि० का निकाह़ स्वयं पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल० ने ह़ज़रत अ़ली रज़ि० के साथ पढ़ाया। निकाह़ के समय दो गवाह और एक वकील। लड़की के पास जाकर उसको बताते हैं कि उसका निकाह़ अमुक मर्द से इतने महर पर किया जा रहा है। इसका जवाब आ़मतौर से ख़ामोशी से दिया जाता है और इसको लड़की की स्वीकारोक्ति समझा जाता है। यह गवाह और वकील प्रायः ख़ानदान के लोग और लड़की के क़रीबी रिश्तदार होते हैं। निकाह़ पढ़ने वाला इस के बाद बुलन्द आवाज़ से कुर्आन शरीफ़ की आयतें, ह़दीसें और दुआ़ के कुछ वाक्य अरबी में कहता है जिसको ख़ुत्ब–ए–निकाह़ कहते हैं, इसके बाद ईजाब व कुबूल करवाता है जिसके आ़मतौर पर यह शब्द होते हैं "मैंने अमुक व्यक्ति की लड़की जिसका नाम यह है, को उनकी तरफ से इतने महर पर तुम्हारे निकाह़ में दिया, तुमने क़बूल किया?" इस पर दुल्हा इतनी आवाज़ में जो क़रीब से सुन ली जाये कहता है, "मैंने कुबूल किया" फिर काजी (निकाह पढ़ाने वाला) और सभी उपस्थित लोग दुआ़ के लिए हाथ उठाते हैं और दुआ़ करते हैं कि दुल्हा दुल्हन में प्रेम व मह़ब्बत हो और उसका वैवाहिक जीवन सुखमय हो।

इधर कुछ दिनों से बहुत से उलमा ख़ुत्बे का अ़रबी ह़िस्सा पढ़ने के बाद उर्दू में संक्षिप्त सम्बोधन करते हैं जिसमें निकाह़ और उसकी ज़िम्मेदारियों पर प्रकाश डालते हैं। और प्रयास किया जाता है कि निकाह़ मात्र एक रस्म और तफ़रीह़ी चीज़ होकर न रह जाये बल्कि इसमें दूल्हा और उपस्थित लोगों को धार्मिक और नैतिक सन्देश मिले और उनके अन्दर ज़िम्मेदारी का एह़सास जागे।

एक तक़रीर का नमूना

(ख़ुत्ब–ए–मसनूनः के बाद)

सज्जनों ! यह निकाह मात्र रस्म व रिवाज और प्राकृतिक तकाजे की प्रतिपूर्ति नहीं। निकाह़ एक अ़िबादत नहीं बल्कि कई अ़िबादतों का जोड़ है। इससे एक शरअ़ी हुक्म नहीं, दर्जदनों और बीसियों शरअ़ी हुक्म सम्बन्धित हैं। इसका महत्व कुरआन, ह़दीस और फ़िक्ह़ (ज्यूरिस्प्रूडेन्स) की किताबों में ख़ूब बयान किया गया है। किन्तु इस सुन्नत से गफ़लत इतनी आ़म है कि जितनी किसी और सुन्नत से नहीं। इससे अल्लाह की नाफ़रमानी और शैतान के आज्ञापालन और रीति रिवाज की पाबन्दी का मैदान बना लिया गया है। निकाह़ में हमारे जीवन के लिए भरपूर सन्देश है। ख़ुत्ब–ए–निकाह़ की जो आयतें प्रारम्भ में पढ़ी गई हैं उसमें बताया गया है कि ह़ज़रत आदम और उनकी पत्नी एक अकेला जोड़ा था। इनसे अल्लाह ने मानव वंशज को बढ़ाया और भूतल को इन्सानों से भर दिया। अल्लाह ने इन दो हस्तियों में ऐसा प्रेम जागृत किया और उनके संयोग में ऐसी बरकत दी कि आज दुन्या इसकी गवाही दे रही है तो ख़ुदा के लिए यह क्या मुश्किल है कि इस जोड़े से, जिसका

निकाह़ अभी पढ़ा गया, एक परिवार आबाद कर दे। आगे की आयत में कहा गया है, अपने उस परवरदिगार से शर्म करो जिसके नाम पर तुम एक दूसरे से सुवाल करते हो।

सज्जनों ! सारा जीवन सुवाल ही सुवाल है व्यापार, शासन शिक्षा सब एक प्रकार के सवाल हैं, एक पक्ष सुवाल करने वाला है, दूसरा उस सुवाल की पूर्ति करने वाला। यही सभ्य और विकसित समाज की विशेषता है। यह निकाह़ क्या है ? यह भी एक सभ्य और शुभ सुवाल है। एक शरीफ ख़ानदान ने दूसरे शरीफ़ ख़ानदान से सुवाल किया कि हमारे बेटे को एक जीवन साथी की ज़रूरत है। उसका जीवन अधूरा है उसे पूरा कीजिए। दूसरे शरीफ़ ख़ानदान ने इस सुवाल का सहर्ष स्वीकार किया। फिर वह दोनों अल्लाह का नाम बीच में लाकर एक दूसरे से मिल गये। और दो आत्माएं जो कल तक एक दूसरे से अजनबी और दूर थीं, वह ऐसी क़रीब और बेगाना से यगाना हो गईं कि इनसे बढ़कर सानिध्य की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। एक की क़िस्मत दूसरे से समबद्ध और एक का सुख–दुख दूसरे का सुख–दुख बन गया। यह सब अल्लाह के नाम का करिश्मा है कि अब इस नाम की लाज रखना। बड़े स्वार्थ की बात होगी कि तुम यह नाम बीच में लाकर अपनी ग़रज़ और स्वार्थ को पूरा कर लो और काम निकाल लो और फिर खुदा के नाम को साफ़ भूल जाओ और जीवन में उसके मताल्बे (मांग) को पूरा न करो। आगे भी इस नाम को याद और इसकी लाज रखना। फिर फ़रमाया कि हां रिश्तेदारों का भी ध्यान रखना। आज एक नया रिश्ता हो रहा है, इसलिए ज़रूरत पड़ी कि पुराने रिश्तों को भी याद दिला दिया जाये कि इस रिश्ते से पुराने रिश्ते का ह़क़ समाप्त नहीं हो जाता है। ऐसा न हो कि पत्नी के इस रिश्ते को याद रखो और मां के रिश्ते को भूल जाओ। ससुर की सेवा ज़रूरी समझो, यदि कोई यह सोचे कि ऐसी बातों की कौन निगरानी करेगा, और कौन इसे देख रहा है, तो समझ रखो कि अल्लाह सब कुछ देखता है, यह वह गवाह है कि जो हर समय साथ रहेगा। आगे की आयत में एक कटु सत्य याद दिलाया गया है। यह पैगम्बर ही की शान है कि ऐसी खुशी के मौक़े पर ऐसे कटु सत्य का उल्लेख करें जिससे आदमी अपने लक्ष्य से ग़ाफ़िल न हो पाये और उस दौलत पर नज़र रखे जो साथ जाने वाली और हमेशा साथ रहने वाली है, अर्थात, ईमान की दौलत फ़रमाया कि यह जीवन कितना ही सुखमय और आनन्दमय हो और कितना ही लम्बा हो इसकी चिन्ता बनाये रखना कि इसकी समाप्ति अल्लाह के आदेशों के अनुपालन और ईमान पर हो। यही वह सच्चाई है कि जिस को दुन्या का एक अत्यन्त सफल मानव, जिसे अल्लाह ने सब कुछ दिया था और हर प्रकार से मालामाल किया था, चरमसीमा पर पहुंचने के बाद भी न भूलने पाये।

और अन्तिम आयत में फ़रमाया ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सच्ची व पक्की बात ज़बान से निकालो मानो दुल्हा को निर्देश दिया जा रहा है कि वह अपनी ज़बान से निकलने वाले शब्द की ज़िम्मेदारी और उसके दूरगामी परिणामों को महसूस करे। वह जब कहे कि "मैंने कुबूल किया" तो समझे कि उसने कितना बड़ा इकरार किया है और इससे उस पर कितनी बड़ी ज़िम्मदारी आती है। फिर फ़रमाया कि यदि कोई ऐसी ही जांच तौल कर बात कहने का आदी बन जाये और उसके अन्दर स्थायी रूप से ज़िम्मेदारी का यह एह़सास पैदा हो जाये तो उसका पूरा जीवन सच्चाई के सांचे में ढल जायेगा। वह एक अनुकरणीय पात्र बन जायेगा और अल्लाह की रज़ामन्दी का पात्र बन जायेगा। और अन्त में फ़रमाया कि असली कामयाबी अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों के अनुपालन में हैं, न काम व मोह की पैरवी में न रीति–रिवाज की पाबन्दी में।

खुत्ब–ए–निकाह और ईजाब व कुबूल के बाद छुहारे जो इसी मौके के लिए लाये जाते हैं, लुटाये या तक़सीम किये जाते हैं। यह निकाह़ की पुरानी सुन्नत है।

वैवाहिक जीवन एक अ़िबादत

इस्लाम में वैवाहिक जीवन को एक अ़िबादत का दर्जा दिया गया है, और ह० मुह़म्मद सल्ल० ने अपने जीवन में इसका सबसे बड़ा नमूना पेश किया है। आपने फ़रमाया, "तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे ज़ियादह बेहतर हो और मैं अपने घर वालों के लिए तुमसे सबसे बेहतर हूं।"

फलतः आपके अन्दर नारी के प्रति जो सम्मान उसकी अनुभूति और कोमल भावनाओं का जो लिह़ाज़ था, वह नारी जगत के बड़े–बड़े वकील और नारी की प्रतिष्ठा के बड़े–बड़े दअ़वेदार के यहां नहीं मिलता। आप ने अपनी पत्नियों की दिलजोई (सांतवना)

उनकी जायज़ तफ़रीह में सहभागिता, उनकी भावनाओं का ध्यान और उनके बीच न्याय व इन्साफ की जो मिसाल छोड़ी है उसकी नज़ीर नहीं मिलती। उन्हीं के साथ नहीं बलिक बच्चों के साथ भी आप इस प्रकार का व्यवहार करते थे कि नमाज़ जैसी चीज़ को आप इसलिए संक्षिप्त कर देते थे कि किसी मां को तकलीफ़ न हो। अगर कोई बच्चा रोता था तो आप नमाज़ को संक्षिप्त कर दते थे यह बहुत बड़ा त्याग है।

आपके लिए तो नमाज़ से बढ़कर कोई चीज़ थी ही नहीं। इससे बढ़कर कोई कुर्बानी नहीं हो सकती थी। आपने फ़रमाया, कभी–कभी मैं चाहता हूं कि लम्बी नमाज़ पढ़ाऊं लेकिन जब किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता पढ़ाऊं तो मुझे ख़याल होता कि कहीं इसकी मां का दिल न लगा हो, इसकी मां परेशान न हो जाये, इसलिए नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूं।

(पृष्ठ ६ का शेष)

वालिदैन के हुकूक़ –

१८२. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी हुजूर सल्ल० के पास आया और अ़र्ज़ किया आप से हिजरत और जिहाद की बैअ़त करता हूं और अल्लाह तआ़ला से अ़ज्र (सवाब) का उम्मीदवार हूं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया क्या तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा हैं उस शख़्स ने जवाब दिया हां बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं, आप सल्ल० ने फ़रमाया क्या तुम अल्लाह तआ़ला से अ़ज्र के इच्छुक हो तो उस शख्स ने अ़ज्र किया हां, मैं अज्र का उम्मीदवार हूं आप सल्ल० ने फ़रमाया तो तुम अपने वालिदैन के पास वापस जाओ और उनके साथ अच्छा व्यवहार करो।

(बुखारी, मुस्लिम)

वालिदैन की फ़रमाबरदारी जन्नत में दाख़िल होने का ज़रिया–

१८३. हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़लील हो, ज़लील हो, ज़लील हो लोगों ने पूछा अल्लाह के नबी कौन ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जिसने अपने वालिदैन को बुढ़ापे में पाया, एक को या दोनों को और फिर जन्नत में दाख़िल नहीं हो सका।(मुस्लिम)

वालिद का हक़–

१८४. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कोई लड़का अपने वालिद का हक़ अदा ही नहीं कर सकता मगर यह कि बाप गुलाम हो और उस को ख़रीद कर आज़ाद कर दे। (मुस्लिम)

वालिदैन की फ़रमाबरदारी –

१८५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) से रिवायत है कि मेरे निकाह़ में एक औ़रत थी और वह मुझे महबूब थी लेकिन हज़रत उमर (रजि०) उसको ना पसंद फ़रमाते थे अतः मुझ से कहा कि तुम इस को तलाक़ दे दो मैंने तलाक़ देने से इन्कार किया मेरे इन्कार पर उमर (रज़ि०) हुजूर (सल्ल०) के पास तशरीफ़ लाए और आप से उसका ज़िक्र किया हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम उसको तलाक़ दे दो।

(अबू दाऊद)

वालिदैन की वफ़ात के बाद उनके लिए दुआ व इस्तिग़फ़ार

१८६. हज़रत मालिक बिन रबीअ़: साअ़दी (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग हुजूर (सल्ल०) के पास थे कि इतने में बनू सलमः का एक शख़्स आया और अ़र्ज किया ऐ अल्लाह के नबी क्या कोई ऐसी नेकी है जिसको मैं अपने वालिदैन के इन्तिक़ाल के बाद भी (उनके हक में) करूं? आप सल्ल० ने फरमाया हां उनके लिए दुआ–ए–रह़मत करो। उनके लिए इस्तिग़फ़ार करो। उनके बाद उनके अह़द (प्रतिज्ञा) को पूरा करो और उनके रिश्तेदारों के साथ बेहतर सुलूक करो जिनका रिश्ता वालिदैन के माध्यम से ही हो और उनके दोस्तों का इकराम करो। (अबूदाऊद)

रज़ाअ़ी मां बाप की इज़्ज़त–

हज़रत अबू तुफ़ैल से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाहि सल्ल० को देखा कि आप सल्ल० जिअ़राना में गोश्त तक़सीम कर रहे थे कि इतने में एक औ़रत आई और हुजूर सल्ल० से क़रीब हो गई आप (सल्ल०) ने उस औ़रत के लिए अपनी चादर मुबारक बिछा दी और वह उस पर बैठ गई मैंने लोगों से पूछा यह कौन है लोगों ने बताया कि यह आप (सल्ल०) की रज़ाअ़ी (दूध पिलाने के कारण) मां हैं। (अबू दाऊद)

१८८. हज़रत उमर बिन अस्साइब (रज़ि०) से रिवायत है कि उनको मालूम हुआ कि एक दिन हुजूर सल्ल० तशरीफ़ फ़रमा थे आपके रज़ाई बाप आए आप सल्ल० ने कपड़े का एक हिस्सा उनके लिए बिछा दिया और वह उसी पर बैठ गये फिर आप की रज़ाअ़ी (दूध पिलाने के कारण) मां आ गयीं आप ने कपड़े का दूसरा सिरा उनके लिए बिछा दिया वह उस पर बैठ गईं उसके बाद आप सल्ल० के रज़ाई भाई तशरीफ़ लाए आप सल्ल० उनके लिए उठ खड़े हुए और उनको अपने सामने बिठा लिया। (अबूदाऊद)

दअ़वते इस्लामी के मैदान में

नये पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से परहेज़

मौलाना सअ़ीदुर्रहमान आज़मी नदवी

दअ़वते इस्लामी के मैदान से सम्बन्ध रखने वाले लोगों पर कुछ महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारियां होती हैं उनमें बुन्यादी ज़िम्मेदारी यह है कि हर हालत में दीन की दअ़वत देता रहे और साथ ही साथ उन हालात और उन वातावरण का पूरा–पूरा ख़याल रखे जिनमें वह सांस ले रहा है। इसी प्रकार जिसको बात की जाए उसकी योग्यता का पूरा ख़याल रखा जाए, यह वह साधारण चीज़ें हैं, जो एक दअ़वत देने वाले के लिए अल्लाह के सन्देश को सही प्रकार से पहुंचाने में मदद मिलती है, और इस्लामी दअ़वत को विस्तृत करने में महत्वपूर्ण चीज़ यह भी है, कि उलमा–ए–किराम और दीन पर नज़र रखने वाले दूसरे लोग नए ज़माने की परिभाषा के प्रयोग से परहेज़ करें जो कभी तो दीन के प्रभाव को कम कर देती हैं और कभी सियासी और समाजी समस्याएं कठिनाइयां पैदा कर देती हैं, जिसके कारण दअ़वते इस्लामी के काम को नुकसान पहुंचता है और दअ़वत की राह में रूकावट पैदा होती है।

हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो दीन की दअ़वत देने वाले कहलाते हैं और इन्सानी समाज में इस्लाम का सन्देश भी पहुंचाते हैं, परन्तु जिस समय वह लोगों के सामने अपनी बातों को सुनाने लगते हैं, और ऐसे शब्द प्रयोग करते हैं, उस समय वह सतर्कता और हिक्मत से काम नहीं लेते हैं कभी ऐसे दीन की दअ़वत देने वाले लोग देखने में आए, जो अपनी सीमा से आगे बढ़ जाते हैं, और ऐसी चीज़ों में मग्न हो जाते हैं जिनका सम्बन्ध न उनके अस्तित्व से होता है और न दअ़वत के काम से होता है।

बहरहाल जो भी हो, किसी काम में सीमा से आगे न बढ़ें, प्रतिज्ञा (अहद) को पूरा करें अन्यथा सामने वाले को इस दअ़वत के कुबूल करने और उससे सन्तुष्ट होने में रुकावट बनते हैं और दअ़वत देने वाले की चर्चा को कलंकित कर देते हैं जो अपने आचरण को अदा करने से विवश रहा हो। इस स्वभाव से दअ़वत देने वाले लोगों को दअ़वत के विशाल मैदान में जिन नुकसानात का अनुभव हुआ है वह लोगों पर छिपा नहीं है।

एक प्रकार के और भी दअ़वत देने वाले लोग हैं, जो दअ़वत की बुन्याद केवल आलोचना पर रखते हैं; यह बात तय है कि उम्मते इस्लामिया के कन्धे पर जो ज़िम्मेदारियां डाली गयी हैं विशेष रूप से दअ़वत के मैदान में, उसी समय पूरी हो सकती हैं जबकि "अम्र बिल् मअ़रूफ़ि और नहिं अ़निल्मुन्कर" दोनों ही को एक साथ किया जाए, यही कारण है कि, जब भी इस पर अ़मल किया गया, उस वक़्त उसके आश्चर्य जनक और चकित कर देने वाले परिणाम सामने आए, और कभी तो चमत्कार (करामतें) भी जाहिर हुए, इतिहास में ऐसी दअ़वत देने वालों की कमी नहीं है।

यह बात कहने योग्य है कि नए ज़माने की सभ्यता ने इन्सान के लिए बहुत सारी चीज़ें प्रस्तुत कीं (जैसे इल्म व हुनर और वह कल्चर व शिष्टाचार पैदाकरना, जिसने तमाम इन्सानी समाजों में परिवर्तन कर दिया, और एक दूसरे को निकट लाने की कोशिश की) तो उस समय उसने इस्लामी ख़यालात और दीनी व समाजी विचारों पर हमला किया, उसने बदल कर के शक व शुब्हा का माहौल पैदा किया, और फिर उन बदले हुए विचारों की व्याख्या के लिए परिभाषिक शब्द का सहारा लिया जो अर्थ को बदलने और वास्तविकता को बिगाड़ने में सहायक सिद्ध हुए।

परन्तु बदक़िस्मती से उनका इस सांठ–गांठ को बहुत से दीनी मदर्से और इस्लामी मराकिज़ भांप नहीं सके जिसका परिणाम यह हुआ कि बहुत से ईसाई पारिभाषिक शब्द और यहूद व नसारा के लिखने बोलने के बहुत से व्यवहार जो केवल और केवल उनके प्रोपेगन्डा और उनकी मसीही या यहूदी दअ़वतों के साथ महत्वपूर्ण हैं, वह दअ़वते इस्लाम के मैदान में विभिन्न प्रकार के इल्मी और तहज़ीबी शक्लों में फैल गये हैं और मुसलमानों के दर्मियान दअ़वती रूप में और धर्म प्रचार के कामों में प्रयोग भी होने लगे। उन्हें उनकी छिपी हुई चंचलता का अनुभव तो नहीं हुआ।

परन्तु धीरे–धीरे उन परिभाषिक शब्दों ने सही दृष्टिकोण रखने वालों के लिए ग़लत दृष्टिकोण का रास्ता आसान कर दिया। अस्ल में यह बुरी साठ–गांठ बहुदेववादी और उनके आलोचनाकार के विचारों और वास्तविकता के संशोधन के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रखा है, और वह केवल इस लिए कि उनके सीनों में इस्लाम और मुसलमानों के लिए कीना–कपट का एक समुद्र भरा हुआ है, और वह लोग चाहते हैं कि दीने इस्लाम की पवित्र और अच्छी तअ़लीमात पर, और हमेशा रहने वाली सम्मानित और इन्साफ पसंद शरीअ़ते इस्लामी पर जिहालत व गुमराही की चादरें तान दें ।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि बहुदेववादी की इस कार्यवाही ने बुद्धिमान मुसलमानों और नौजवानों के हृदय में बड़ी आसानी के साथ संदेह पैदा कर दिए हैं। और विशेष रूप से वह लोग जिन्होंने आधुनिक पाठशालाओं में यूनिवर्सिटयों में शिक्षा प्राप्त की, या वह जिन्होंने यूरोपीय देशों में शिक्षा प्राप्त की है, उन्होंने दीने इस्लाम की स्वच्छ शिक्षा में कुछ उलट–फेर कर दिया और उसके कारण स्वच्छ हृदय वाले मुसलमानों के ईमान व आस्था में हल चल पैदा कर दी है। ज़ाहिर है कि इस गिरोह की पथभ्रष्टता में उन ग़लत पारिभाषिक शब्दों का बड़ा हिस्सा है जिनको मुसलमानों ने अपना लिया है, या जिनको आधुनिक पाठशालाओं विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों से प्राप्त किया है जिनको इस्लामी शरीअ़त से सम्बन्धित सही मअ़लूमात नहीं है, वह इस्लाम जो एक पवित्र, हर प्रकार के संशोधन और बदलाव से बहुत दूर और हमेशा रहने वाला दीन है। इस प्रकार के नियमों के कुछ नमूने निम्न लिखित हैं जिन पर विचार करने से बहुत सारे नियमों को समझना आसान हो जाएगा।

जैसे शब्द "सौरः" को लीजिए, यह परिभाषा कम्यूनिज्म का आविष्कार किया हुआ है, कहा जाता है "सौरतुश्शुयूअ़ियः" जिसका अर्थ है "कम्यूनिज्म इन्क़िलाब" परन्तु मुसलमानों में भी इसको अनुचित प्रयोग किया जाने लगा और कहा जाने लगा "सौरतुल इस्लामिया" इस्लामी परिवर्तन और "इस्लामी सौरः" इस्लाम एक इन्क़िलाबी धर्म है, हालांकि इस्लाम इन्क़िलाबी नहीं बल्कि सुधार वादी दीन है।

२. इसी प्रकार से "रिजाल" दीन एक परिभाषिक शब्द है जो ईसाइयों के यहां केवल उनके उल्मा के लिए ही प्रयोग होता है, इसको हमारे उल्मा–ए–किराम के लिए भी प्रयोग किया जाने लगा है।

३. इसी प्रकार हज का ह़ाल है जो एक पवित्र इबादत है और इस्लाम की बुन्याद का महत्वपूर्ण अंग है इसको "अल्मूतमेरूल् इस्लामी अल् आ़लमी" का नाम देना, अर्थात यह कि हज मुसलमानों का एक विश्व सर्व साधारण सम्मेलन है।

४. आसानी के लिए वर्तमान काल ही में प्रस्ताव हुआ " मुहाकिम शरअ़ीयः" के बजाए "इस्लामी अदालत" के पारिभाषिक शब्द के प्रयोग से स्यासी गिरोहों में किस प्रकार खलबली मच गयी, इसी प्रकार नमाज़ को और अन्य इबादात को बल्कि सिरे से धर्म को इन्सान का प्राइवेट मामला कहा आदि।

ज़रूरत इस बात की है कि तमाम मुसलमान और उल्मा–ए–किराम और दीन की दअ़वत देने वाले और लेखकों, और तक़रीर करने वाले विशेष रूप से किसी भी ऐसे परिभाषिक शब्द के प्रयोग से बचें जिसका इस्लामी रूह से कोई सम्बन्ध न हो और जिसका कोई अर्थ न निकालता हो, बल्कि वह दीने इस्लाम के लिए निंदित और नुक़सान का कारण बन जाए और जिससे इस्लाम की पवित्रता और उसके संदेश से सम्बन्धित लोगों के दर्मियान सन्देह और फ़ित्नों का माहौल पैदा होता हो।

अनुवाद – "और तुम अत्याचारी लोगों की तरफ मत झुको, कि जहन्नम की आग तुम्हें लग न जाए और तुम्हारा कोई न मित्र न तुम्हारी सहायता की जायेगी।

अनुवाद : मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी

मिस्वाक (दातून) करने से रोज़ा नहीं टूटता। मकरूह भी नहीं होता।

पान खाने से रोज़ा टूट जाता है चाहे सादा हो चाहे तम्बाकू वाला।

सुर्मा लगाने या आंख में दवा डालने से रोज़ा नहीं टूटता।

बीड़ी, सिग्रेट और हुक्का पीने से रोज़ा टूट जाता है।

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(नवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

बच्चों की तालीम की शुरूआत ख़ुदा के नाम पर करो। कोई और शब्द न कहने पायें। ऐसी बातें न सिखाओ जिन का आज कल चलन है कि बचपने से अंग्रेज़ी, हिन्दी शब्द सिखाये जाते हैं। ऐसे शब्द उनके सामने न निकालो, बच्चा बहुत जल्द सीख लेता है। इन बातों से खुश न हो बल्कि अफसोस करो। उनकी ज़बान पर खुदा और रसूल सल्ल० का नाम जारी हो, इस तरह से कि ख़ुदा की वहदानियत (ख़ुदा के एक होने का अ़क़ीदः) व कुदरत का पूरा यकीन हो जाये। जो चीज़ तुम से मांगे कहो ख़ुदा से मांगो, और जो चीज़ दो कहो ख़ुदा ने दी है। हर तरीकः से उनके दिल में ईमान की ताक़त पैदा करती रहो। उनके हर काम की शुरूआत बिस्मिल्लाह के साथ करो। उनको वह बातें सिखाओ कि ख़ुदा और रसूल (सल्ल०) को पहचानें। जब उनको समझ आजाये तो उनको कुर्आन मजीद की छोटी छोटी सूरतें सिखाती रहो। एक एक शब्द अनुवाद सहित। धीरे धीरे बड़ी सूरतें यूं ही आगे चलके सीख जायेंगे।

बच्चों की देख भाल : बुरी सुहबतों (कुसंग) से दूर रखो। हर समय ध्यान रहे कि उनकी तबीअ़त किसी और तरफ़ मायल न हो। उनकी ज़िद पूरी न करो। मांगने से पहले उनकी इच्छा पूरी कर दो ताकि ज़िद न पैदा हो। उनके साथ ऐसा अन्दाज़ रखो कि वह तुम से निडर न हों। तुम्हारा इशारा उनको काफ़ी हो। बहुत मारने और बार बार कहने से बच्चे बेहया हो जाते हैं। बस इशारे से काम लो। हर समय टेढ़ी बातें न करो। थोड़ी खता पर समझा दो। गुस्से में कोई शब्द बेजा न निकालो कि पछताना पड़े। उनकी तरफ़ से किसी को बुरा न कहो बल्कि उन्हीं का कुसूर समझो। उनका कहना न मानो। हर हर बात की जांच करती रहो। उन के विषय में दूसरा व्यक्ति जो कहे उसका यक़ीन करो, मगर थोड़ी देर के लिए जब तक जांच न लो। बच्चे डर से मुकर जाते हैं। अगर तुम उनके कहे पर ध्यान दोगी तो उनको फिर मौका मिलेगा। अगर कोई पड़ी चीज़ उठा लें तो फ़ौरन उसी जगह रखवा दो, भले ही दूर क्यों न हो। अगर तुम उस जगह तक जा सकती है तो जाकर सामने रखवाओ कि आगे एहतियात रहे। किसी ग़ैर की चीज़ के सामने खड़ा न होने दो, अगर वह दे तो विनम्रता पूर्वक वापस कर दो। झूठ और चुगली से रोकती रहो, मार कर हंसो नहीं। उनसे बे तकल्लुफ़ होकर बातें न करो कि वह उलट कर जवाब देने लग जायें। उन पर अपनी बहुत मुहब्बत का इज़हार न करो। किसी बात में उनकी बेजा तरफ़दारी न करो। सब बच्चों को एक नजर से देखो। एक को दूसरे पर प्राथमिकता न दो कि एक दूसरे को ज़लील (निकृष्ट) समझें। कभी बच्चों को हाथ में पैसा न दो। स्वयं उचित समझ कर चीज मंगा कर सबको तक़सीम कर दो। बच्चों के हाथ में पैसा देना, उन की हर इच्छा पूरी करना बड़ी ग़लती है। यह मुहब्बत नही बल्कि अदावत है।

लड़कियों के पर्दे का ध्यान

लड़कियों के पर्दे का बड़ा ध्यान रखो। जब से उनको समझ आये हम उम्र लड़कों से अलग रखो, उनसे बात करने का मौक़ा नदो बल्कि लड़कों के पास भी अकेले न रहने दो। हंसी मज़ाक से रोकती रहो। उनको बे मौक़ा कहीं आने जाने न दो। अपने साथ भी हर रोज़ हर जगह ले जाना भी उचित नहीं। भलेही चाचा और मामा ही का घर क्यों न हो। घर से मनाही नहीं बल्कि रास्ते का ख़याल है और उनके शौक में तरक़्क़ी होने का डर है। आज तुम्हारे साथ गईं कल किसी और को साथ लेकर जायेंगी। हर काम में नतीजे पर नज़र रखो। यह तालीम बच्चों और बच्चियों के लिए ज़रूरी है। बच्चियों के पर्दे का जियादा ध्यान रखो। हर बुरी बात में रोक टोक करती रहो। उनमें किसी प्रकार की आज़ादी पैदा न हो सके। कपड़े और ज़ेवर अपनी ख़ुशी के अनुसार पहनाओ, उनकी राय पर न छोड़ो। बीते समय की हालत पर नज़र रखो। उसके ख़िलाफ न करो। बेजा किताबें न देखने दो। नमाज़ पढ़ने और

कुर्आन व हदीस देखने की ताकीद करती रहो। अदब लेहाज सिखाओ। बहुत बात करने से रोको। बहुत बोलना मूर्खता की दलील है। बच्चियां जो कम बोलती हों और शर्मीली हों, भली मालूम होती हैं।

दस्तकारी (हस्तकला) :

बच्चियों को काहिल न बनाओ। उनसे काम लेती रहो। कपड़े सिलवाओ। खाने पकाने में शामिल रखो। कोई हांडी खास उन्हीं से पकवाओ। ख़ानादारी में शामिल करती रहो कि उनको महारत (बखूबी जानना) हो। खानादारी का हिसाब उन्हीं के हाथ में रखो, मगर तुम उनसे हिसाब लेती रहो कपड़े आदि के लेने देने और उनके बदन की सफ़ाई का वही ध्यान रखो जिस के बारे में मैं लिख आई हूं। यहां तक कि जितनी जरूरतें तुम्हें पेश आती हैं और उनको भी भुगतनी हैं वह सब उनसे पूरी कराती रहो। उन्हीं पर न छोड़ बैठो कि उनके चले जाने से तुम्हें मुसीबत उठानी पड़े। हर काम को उलटती पलटती रहो कि करने की आदत रहे। कतर ब्योन्त और दस्तकारी में ऐसी अभ्यस्त रहें कि दूसरों को उनसे मदद मिलती रहे। सुघड़ औरतों के लिए यह सब से अधिक ज़रूरी है अगर यह बातें हुईं तो थोड़ी आमदनी में भी आराम पा सकती हैं। जहां तक सम्भव हो और अवगुण नहो बच्चियों को हर काम का आदी बनाना चाहिए। किसी समय वह बेकार न रहें। आज उनकी मेहनत अगर तुम से नहीं देखी जाती तो कल तुम कैसे देख सकोगी जब उन्हें पहाड़ उठाना पड़ेगा और तब यही मसल ठीक उतरेगी, "अब पछताये का होत जब चिड़िया चुग गई खेत।" (जारी)

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ ४ का शेष)

है परन्तु वह अपने अन्त तक यही घोषणा करता रहता है कि हमारी सत्ता को कोई ख़तरा नहीं। बहुत कम सत्ताधारी अपने सत्ताकाल का हिसाब लगाते हैं। कि हम को क्या करना चाहिए और हमने क्या किया। क्या अच्छा होता कि हमारी माया जी भी इस प्रकार सोचतीं। बहुत से सत्ताधारियों को तो यह विश्वास ही नहीं है कि उनको अपने जीवन का लेखा जोखा विधाता के समक्ष प्रस्तुत करना है। परन्तु हमारा तो विश्वास है कि सत्ता का उलटफेर और यह जीवन मरन जिस सर्व शक्तिमान के हाथ में है वह एक एक जीव से एक एक पल तथा एक एक पाई का हिसाब भी ले कर छोड़ेगा।

सितम्बर का मास हमारे लिए बड़ा शुभ सिद्ध हुआ जिस में हमारे प्रिय नेता श्री मुलायम सिंह ने पुनः मुख्य मंत्री का पद ग्रहण करके भारीमतों से बहुमत सिद्ध कर दिया। मुलायम जी ने पहले भी जनता के लिए अच्छे काम किये हैं आशा है कि वह फिर राज्य तथा देश के हित में काम करेंगे। हम ईश्वर (खुदा) से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे प्रिय मुख्यमंत्री से भले काम ले।

इलेक्शन के समय ही यह आशा की जाती थी कि समाजवादी हुकूमत बनाएगी लेकिन हम क्यों किसी को दोष दें कि फुलां रूकावट बने हम तो समझते हैं कि ईश्वर (खुदा) को यूं ही मंजूर था जिस में न जाने कितनी मसलहतें (छुपे लाभ) थीं खुदा जो करता है अच्छा ही करता है खाने का मज़ा तब बढ़ जाता है जब खूब भूख लग जाए पानी का मूल्य उस समय मालूम होता है जब प्यास खरी हो जाए। इसी प्रकार इस देरी में मुलायम जी की कद्र बढ़ गई है।

(ऐ मुहम्मद (सल्ल०) अपने अल्लाह से) आप (यूं) कहिएः ऐ अल्लाह तमाम मुल्कों के मालिक आप जिसे चाहते हैं मुल्क देते हैं। जिससे चाहते हैं उससे मुल्क ले लेते हैं। जिसे चाहते हैं ग़ालिब कर देते हैं जिसे चाहते हैं पस्त कर देते हैं। सारी भलाइयां आप के हाथ में हैं आप हर बात पर कुदरत रखते हैं। (पवित्र कुर्आन)

0522-508982
अनस
मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

सुलतानों की न्याय प्रियता

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

भारत–पाक उपमहाद्वीप में मुसलमानों की हुकूमत स्थापित हो चुकी है। बादशाहों के साथ विद्वान और इस्लाम के प्रचारक भी देश में दाखिल हो गए हैं और इस्लामी शिक्षाओं और शरीअत के प्रचार प्रसार और उसके व्यवहारिक नमूने प्रस्तुत करने में बड़ी तत्परता व तीव्रता से व्यस्त हैं। न्याय व्यवस्था अपना लोहा मनवा चुकी है। यदि स्वयं बादशाह या सुलतान भी किसी प्रकार की ग़लती या कानून का उल्लंघन करता है, तो वह भी काजी की अदालत के न्यायिक फैसले के सामने अपना सर झुका देता है। अदालतों की न्याय प्रणाली और उनके पदाधिकारी काजियों की न्याय प्रियता पर पूरा भरोसा और विश्वास स्थापित हो चुका है।

तो यह लीजिए, देखिए सुलतान गयासुद्दीन बलबन का राज है। उस समय के सबसे बड़े क्षेत्र बदायूं का प्रशासक मलिक लईक को नियुक्त किया जाता है। वह सुलतान बलबन का मुख्य निजी सचिव है। हर समय उसके नेतृत्व में चार हजार सवार रहते हैं। बड़े शान के साथ शासन कर रहा है। एक दिन किसी बात पर एक सेवक से नाराज हो गया और उसे इतना मारा कि वह मर गया। कुछ समय के बाद सुलतान गयासुद्दीन बलबन शाही दौरे पर बदायूं पहुंचा तो मृतक की पत्नी फरियाद लेकर सुलतान की सेवा में उपस्थित हुई और अपनी व्यथा सुनाई।

सुलतान ने सारी बात सुनकर आदेश दियाः हाकिम बदायूं मलिक लईक को उतने कोड़े मारे जाएं जितने उसने अपने सेवक को लगाए थे।' शाही आदेश का पालन किया गया। मलिक लईक कोड़ों की मार सहन न कर सका और मर गया। सुलतान ने आदेश दिया कि उसकी लाश शहर के दरवाजे पर लटका दी जाए, ताकि ज़ालिम अधिकारी उसका यह दुष्परिणाम देख कर सीख लें।

सुलतान बलबन की ही एक दूसरी घटना इस प्रकार हैः उसका एक प्रमुख और बहुत ही निकटतम अमीर हैबत खां अवध का शासक था। एक दिन वह तरंग और मौज मस्ती की हालत में था कि उसके सामने से एक व्यक्ति गुजरा। उसने उसे कत्ल कर दिया। मृतक की पत्नी सुलतान के पास गयी और उससे न्याय की गुहार की।

सुलतान बलबन ने आदेश दिया कि हैबत खां को पांच सौ कोड़े लगाए जाएं। फिर हैबत खां को उस व्यक्ति की पत्नी के हवाले कर दिया और उससे कहा कि यह पहले मेरा गुलाम था, अब यह तेरा गुलाम है। तुम चाहो तो इसे कत्ल कर दो या माफ कर दो। हैबत खां ने दूसरे अमीरों के माध्यम से बादशाह से सिफारिश करायी। अपनी जान बचाने के लिए उस महिला को तीस हजार रूपये हरजाना देने की बात कहलवायी। सुलतान बलबन ने उसकी यह विनती स्वीकार कर ली, लेकिन हैबत खां इस घटना से इतना लज्जित हुआ कि उसने घर से निकलना ही छोड़ दिया।

न्याय के लिए सुलतान की जागरूकता और सत्यता की जांच की एक शिक्षाप्रद घटना देखिए।

सुलतान सिकन्दर लोधी का शासन है। गवालियर रियासत के दो भाइयों ने गरीबी और तंगदस्ती से परेशान होकर, शाही लश्कर में नौकरी कर ली। कुछ ही समय के बाद एक जंग में भाग लिया और जंग समाप्त होने के बाद ग़नीमत के माल में कीमती कपड़े और दो हीरे मिले। छोटे भाई ने उसी माल पर संतोष किया और वापसी का इरादा कर लिया मगर बड़ा भाई और अधिक भाग्य आजमाना चाहता था, अतएव दोनों भाइयों ने वह माल बराबर बराबर आपस में बांट लिया। एक भाई घर जाने लगा तो दूसरे भाई ने उसे अपना सामान देकर कहा कि घर पहुंच कर मेरी पत्नी को मेरा यह सामान दे देना।

जब वह घर पहुंचा तो उसके दिल में लालच आ गया और उसने अपनी भाभी को कुछ सामान तो दे दिया, मगर हीरा नहीं दिया। जब बड़ा भाई थोड़े दिनों बाद घर आया तो उसने अपनी पत्नी से हीरा देखने के लिए मांगा। पत्नी ने पूरा सामान ज्यों का त्यों लाकर अपने पति के सामने

रख दिया। उसने पत्नी से हीरे के बारे में मालूम किया तो उसने जवाब दिया कि तुम्हारे भाई ने मुझे कोई हीरा नहीं दिया। बड़े भाई को गुस्सा आया और वह सीधा छोटे भाई के पास पहुंचा। भाई ने उसे पूरा विश्वास दिलाया कि उसने भाभी को हीरा दे दिया था। अतः दोनों भाइयों ने पत्नी पर चोरी का आरोप लगाया। पत्नी ने शहर काजी के सामने मुकदमा पेश किया। काजी ने गवाह मांगे।

बेईमान भाई ने दो झूठे गवाह तैयार कर लिए। काजी ने उन गवाहों के बयान पर विश्वास करके निर्णय कर दिया कि हीरा पत्नी से वसूल किया जाए। पत्नी परेशान होकर आगरा में सुलतान लोधी के दरबार में पहुंची और पूरी कहानी सुलतान को सुनाई। सुलतान ने दोनों भाइयों को बुलवाया और सारे सम्बन्धित लोगों से कहा कि वे मोम का वैसा ही हीरा बना कर प्रस्तुत करें जैसा कि वास्तविक हीरा था।

पत्नी ने उसे हीरे के समान मोम का हीरा बनाने से यह कहकर अस्मर्थता व्यक्त की कि जिस चीज़ को उसने देखा ही नहीं उसके जैसा रूप वह कैसे बना सकती है। दोनों भाइयों और गवाहों ने मोम के हीरे बनाए। मगर गवाहों ने जो रूप बनाया वह दोनें भाइयों की बनाए हुए रूप से भिन्न थे। इससे स्पष्ट हो गया कि गवाह झूठे हैं। सुलतान ने दोनों गवाहों को झूठ बोलने पर कत्ल करने की धमकी दी, तो उन्होंने इतना मान लिया कि छोटे भाई ने उनसे झूठी गवाही दिलवायी है। छोटे भाई ने भी अपनी बेईमानी की बात स्वीकार कर ली। इस प्रकार उस बेबस और बेगुनाह महिला को चोरी के आरोप से छुटकारा मिल गया।

गुजरात राज्य पर एक लमबे समय तक बड़े दीनदार, संयमी, सूझ बूझ वाले, साहसी और बुलन्द इरादा, न्यायप्रियता मुसलमान बादशाहों ने शासन किया है, जिस के कारण यह क्षेत्र ज्ञान, श्रेष्ठता, प्रगति और सफलता का केन्द्र बना रहा। उन बादशाहों में मुजफ्फर शाह हलीम, महमूद शाह और अहमद शाह गुफरान पनाह को बड़ी लोक प्रियता प्राप्त रही। सुलतान अहमद शाह गुफरान पनाह की सावधानी, नेकी व संयम और न्याय प्रियता की एक घटना बड़ी शिक्षा प्रद है।

'यादे अय्याम' के लेखक लिखते हैं कि इन्हीं अहमद शाह के दामाद ने अपनी बहादुरी और जवानी के घमंड में एक व्यक्ति को अकारण कत्ल कर दिया। बादशाह को पता चला तो उसने उसे गिरफतार करके क़ाज़ी की अदालत में भेज दिया। क़ाजी साहब ने बादशाह के दामाद को सज़ा से बचाने के लिए मारे गए व्यक्ति के उत्तराधिकारियों से बात चीत की और एक दियत (जान के बदले में माल) के बजाए दो दियत (दोगुणा माल) का प्रस्ताव पर हत्यारे को क्षमा करने पर राजी कर लिया।

यह भी सम्भावना थी कि उत्तराधिकारियों ने बादशाह के प्रताप से प्रभावित होकर अपनी सहमति प्रकट कर दी है और मृतक के बदले धन लेना ही उचित समझा हो। किसी तरह बादशाह गुफरान पनाह को इसकी सूचना मिल गयी। उसने कहा यद्यपि मृतक के उत्तराधिकारी हरजाना स्वीकार करने पर तैयार हैं, फिर भी इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करना चाहिए, अन्यथा धनवानों को यूंही लोगों का खून बहाने का साहस हो जाएगा, इसलिए उन्होंने आदेश दिया : एक सामान्य अपराधी की तरह जन समूह में अपराधी की गर्दन उड़ा दी जाए।

गुजरात ही के बादशाह सुलतान मुजफफर शाह हलीम की एक शिक्षा प्रद घटना कुछ इस प्रकार है।

घोड़ों के एक व्यापारी ने सुलतान मुजफ्फर के विरुद्ध काजी की अ़दालत में दावा किया। काजी ने सुलतान को अ़दालत में बुला भेजा। सुलतान काजी के आदेश के अनुसार अ़दालत में उपस्थित हुआ और दावा करने वाले के साथ खड़ा हो गया।

काज़ी ने व्यापारी के तर्क सुनकर सुलतान के विरुद्ध निर्णय सुनाया। सुलतान ने इस निर्णय को मान लिया और जब तक उसकी ओर से कीमत अदा न कर दी गयी अदालत ही में खड़ा रहा।

नाक में दवा डालने से रोजा टूट जाता है।

कान में दवा डालने से रोजा टूट जाता है।

इंजेक्शन लेने से रोजा नहीं टूटता।

पाखाने के मकाम या पेशाब के मकाम से दवा अन्दर चढ़ाने से रोजा टूट जाता है।

पाखाने पेशाब के मकाम पर दवाएं रखने से रोजा नहीं टूटता।

आपकी समस्याएं और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *जब मरने के क़रीब हो तो क्या करना चाहिए ?*

उत्तर : जब आदमी मरने लगे तो उसको चित लिटा दें और उसके पैर (कअ़बः) की ओर कर दें, सर ऊंचा कर दें, ताकि मुंह (कअ़बः) की ओर हो जाए और उसके पास बैठकर कलिमः ज़ोर–ज़ोर से पढ़ें ताकि आपको पढ़ते सुनकर खुद भी कलिमः पढ़ने लगे और उसको कलिमः पढ़ने का हुक्म न करें, क्योंकि वह वक्त बड़ा मुश्किल है न मालूम उसके मुंह से क्या निकल जाए। अगर वह एक बार कलिमः पढ़ ले तो चुप हो जाएं यह कोशिश न करें कि कलिमा बराबर जारी रहे और पढ़ते पढ़ते दम निकले क्योंकि मक़सद तो केवल इतना ही है कि सबसे आखिरी बात जो उसके मुंह से निकले वह कलिमा होना चाहिए, इसकी ज़रूरत नहीं कि दम टूटने तक कलिमा बराबर जारी रहे। हां अगर कलिमा पढ़ लेने के बाद फिर कोई बात चीत करे तो फिर कलिमा पढ़ने लगें, जब वह पढ़ ले तो चुप हो जाएं।

उसके पास बैठ कर कोई ऐसी बात न रकें कि उसका दिल दुन्या की ओर माइल हो जाए क्योंकि यह वक्त दुन्या से जुदाई और अल्लाह तआ़ला के यहां की हाज़िरी का होता है ऐसे काम करें, ऐसी बातें करें, ताकि दिल दुन्या से फिर कर अल्लाह तआ़ला की ओर हो जाए।

प्रश्न : *मय्यित के नहलाने का सही तरीक़ा क्या है ?*

उत्तर : मय्यित को नहलाने का तरीक़ा यह है कि पहले मुर्दे को इस्तिंजा करा दें, लेकिन उसकी रानो और इस्तिंजा की जगह अपना हाथ न लगायें और न उस पर निगाह डालें, बल्कि अपने हाथ में कोई कपड़ा लपेट लें, या दोस्ताना पहन लें और जो कपड़ा नाफ से लेकर ज़ानू तक पड़ा है उसके अन्दर तक धुलाएं, फिर उसको वुज़ू करा दें लेकिन न कुल्ली कराएं और न नाक में पनी डालें और न पहुंचों तक हाथ धुलाएं बल्कि मुंह धुलाएं, फिर हाथ कुहनी समेत, फिर सर का मसह, फिर दोनों पैर, और अगर तीन बार रूई गीली करके दांतों और मसूढ़ों पर फेर दी जाए, और नाक के दोनों सूराखों में फेर दी जाए, तो भी जाइज है। इस तरह से मुंह और नाक में रूई भर दो ताकि वुज़ू कराते वक्त और नहलाते वकत पानी मुंह में न जाए। जब वुज़ू करा चुकें तो साबुन से मल कर धोएं और साफ़ करके फिर मुर्दे को बाईं करवट पर लिटा कर बेरी के पत्ते डाल कर पकाया हुआ हल्के गर्म पानी से तीन बार सर से पैर तक डालें। यहां तक कि बाएं करवट तक पहुंच जाए, फिर दाहिनी करवट पर लिटाएं और उसी तरह से पैर तक तीन बार इतना पानी डालें कि दाहिनी करवट तक पहुंच जाए। उसके बाद मुर्दे को सर की ओर से थोड़ा उठाएं और उसके पेट को आहिस्ता–आहिस्ता मलें और दबाएं अगर नजासत निकले तो उसको साफ़ करके धो डालें और वुज़ू व गुस्ल में उसके निकलने से कुछ नुक़सान नहीं दुबारा कराने की ज़रूरत नहीं उसके बाद फिर उसको बाएं करवट कर लिटाएं और काफूर पड़ा हुआ पानी सर से पैर तक तीन बार डालें फिर पूरा बदन किसी कपड़े से साफ कर के कफना दे।

प्रश्न — *क्या बेरी के पत्ते डाला हुआ पानी ज़रूरी है ?*

उत्तर — बेरी के पत्ते वाला पानी न हो तो केवल हल्के गर्म पानी से नहलाना काफ़ी है।

प्रश्न — *अगर किसी का शौहर मर जाए तो औ़रत का नहलाना कैसा है ?*

उत्तर — अगर किसी के शौहर का इन्तिक़ाल हो जाए और मर्दों में से कोई न हो तो बीवी को नहलाना और कफनाना दुरूस्त है और अगर बीवी मर जाए तो शौहर को बदन छूना और हाथ लगाना दुरूस्त नहीं मगर देखना दुरुस्त

है और कपड़े के ऊपर से हाथ भी लगाना दुरुस्त है।

प्रश्न — *जाहिद और शाहिद में बिगाड़ होने के बाद जाहिद बराबर सलाम करता है लेकिन शाहिद सलाम के जवाब के अलावा कोई बात नहीं करता तो इसका क्या हल है ?*

उत्तर — जाहिद अपनी ओर से कोशिश जारी रखे, शाहिद आमादा न हो तो यह उसका अमल है जिसका वह खुद ज़िम्मेदार है।

प्रश्न — *क्या इरम नाम रख सकते हैं?*

उत्तर— जी हां रख सकते हैं कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न — *क्या औरतें कब्र पर जा सकती है ?*

उत्तर — औरतों को पहले शुरू ज़माने में जाना मना था बाद में यह हुक्म मन्सूख हो गया मगर अब क़ब्र पर जाने से इस वजह से रोका जाता है कि वह बहुत से शिर्क व बिदअत के अमल करने लगती है, इस लिए न जाना बेहतर है।

प्रश्न— *क्या साड़ी पहन कर औरतें नमाज़ पढ़ सकती हैं ?*

उत्तर — पढ़ सकती हैं।

प्रश्न — *इंशोरेंस कराना कैसा है ?*

उत्तर — इंशोरेंस जाइज नहीं सिवाए इसके कि हुकूमत की तरफ़ से ज़रूरी हो तो मजबूरी पर करा सकते हैं।

प्रश्न — *प्रोविडेंट फंड लेना कैसा है?*

उत्तर — जाइज़ है, मगर सर्विस वाला हो। (वरना वज़ाहत चाहिए)

प्रश्न — *ग्रेच्युटी लेना कैसा है?*

उत्तर — जाइज़ है।

प्रश्न — *रायलटी की रक़म लेना जैसे किताबें आदि की कैसा है ?*

उत्तर — सही नहीं अल्बत्ता अगर बिना तय किये हुए कोई यूं ही कुछ दे दे तो हर्ज नहीं ।

प्रश्न — *कटे हुए नाखून और बाल को क्या करे।*

उत्तर — कटे हुए नाखून और बाल दफन कर देना चाहिए या किसी सुरक्षित जगह डाल दें मगर गन्दी जगह या बाथरूम में न डाले।

प्रश्न — *ओझड़ी खाना कैसा है ?*

उत्तर – ओझड़ी खाना हलाल है।

प्रश्न— *क्या शेयर ख़रीदना जाइज़ है?*

उत्तर — शेयर की खरीद व फ़रोख़्त बिना कब्जे के दुरुस्त नहीं है। (बाकी के लिए स्पष्टीकरण चाहिए)

प्रश्न — *क्या डिबेन्चर जाइज है ?*

उत्तर — इसकी वजाहत (स्पष्टीकरण) चाहिए ताकि जवाब दिया जा सके।

प्रश्न — *क्या बाण्ड ख़रीदना जाइज़ है ?*

उत्तर — बाण्ड की ख़रीदारी कमी जियादती के साथ दुरुस्त नहीं।

प्रश्न — *क्या कमीशन लेना जाइज है?*

उत्तर — कमीशन की बहुत सी शक्लें हैं स्पष्ट करें तो जवाब दिया जाये।

प्रश्न — *क्या पेंशन से मिलने वाली रक़म जाइज़ है।*

उत्तर — हां जाइज़ है।

प्रश्न — *म्यूचुअल फंड जाइज़ है या ना जाइज़।*

उत्तर — म्यूचुअल फंड की वज़ाहत फरमाएं (स्पष्ट करें)

प्रश्न — *फिक्स डिपाज़िट करना कैसा है ?*

उत्तर — जाइज़ नहीं है।

मुनाजात

मौ० मु०सानी हसनी

सारे महरूम मज़लूमो बेकस सकीम
बे सहारा ग़रीब और बेवा यतीम
तेरी रहमत के मुहताज हैं ऐ करीम
इन गरीबों पे फ़रमा तू लुत्फे अमीम
जो मुसाफिर हों उनका सफर कर तमाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

तू हमारे अज़ीज़ों के दिल शाद रख
हर ग़मो फिक्र से उनको आज़ाद रख
अपने रहमो करम से उन्हें याद रख
ख़ैरो बरकत के साथ उनको आबाद रख
हम महल्ला को या रब न रख तश्ना काम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

रहम वालिद पे कर हर नफ़स हर कदम
वालिदा पर हमेशा कर अपना करम
जिनपे कुर्बा दिलो जान करते हैं हम
जिनके कदमों तले मुल्को जाहो हशम
उनको आग़ोशो रहमत में ले सुब्हो शाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

उन बुजुर्गों ने बचपन में पाला हमें
लम्हा लम्हा उन्होंने संभाला हमें
ग़म उठाकर दुखों से निकाला हमें
हर कदम हर नफ़स देखा भाला हमें
उन बुजुर्गों पे यारब करम कर मुदाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

औरतों के हुक़ूक़ और पश्चिमी दुन्या

सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी

आज कल पश्चिम में इन्सानों के अधिकार की बात बड़े जोर व शोर से कही जा रही है और उनके अधिकार की बात "मीडिया" के द्वारा पहुंचाई जा रही है, ऐसा लगता है कि इन्सानों को उनका अधिकार अब मिला है, इससे पहले वह अंधेरे में पड़े हुए थे, औरतों के अधिकार के बारे में तो इस कदर ज़ोर व शोर से बात उठाई जा रहा है मानो सबसे अधिक अधिकार औरतों ही से छीना गया है, और अब पश्चिम ही इसकी जिम्मेदारी निभा रहे हैं कि पूरे संसार में औरत की आज़ादी की बात इस प्रकार सामने लायी जा रही है कि फिर उसके विरुद्ध किसी को बोलने की हिम्मत ही नहीं रही।

हमारे देश में भी कानून बनाने वाले, पार्लामेन्ट से भी आवाज़ें लगाई जा रही हैं कि औरतों के अधिकार दिए जाएं, क्या संसार की सबसे बड़ी समस्या यही है क्या पश्चिम ने औरतों को यह अधिकार देकर समाज को बरबादी से बचा लिया है।

वास्तव में बात यह है कि पश्चिमी दुन्या ने जो औरतों के अधिकार की बात कही है उसका सम्बन्ध औरतों के अधिकार से तो कम और इस्लाम की नैतिकता को बिगाड़ कर सामने लाना अधिक है, जब भी औरतों की बात आती है उसकी चर्चा इस प्रकार की जाती है, कि इस्लाम में सबसे अधिक औरतों के साथ अत्याचार होता है उन्हें घर के अन्दर बंदी कर रखा जाता है।

हां अगर आप दिली भावनाओं से सोचें तो आप को स्वयं ही पता चल जाएगा कि सबसे अधिक पश्चिम ही में औरतों का अधिकार छीना जा रहा है, उन्हें घर के अन्दर रखकर उनका अधिकार उनको मिलना चाहिए न कि उनसे नौकरी करवा कर पैसा कमवाना चाहिए, और पश्चिम में औरतों के अनुसार जो बातें सामने आयी हैं, धीरे धीरे उनकी पोल खुलती जा रही है।

पश्चिमी देश की यह ग़ल्ती है कि औरत का अधिकार सौंपने में उसने उसकी विशेषताओं और इच्छाओं पर ध्यान ही हटा दिया है। औरत को जो अधिकार पश्चिम ने दिए हैं वह औरत समझ कर नहीं बल्कि उसको मर्द बनाकर देने की कोशिश की है, यही कारण है कि उससे उसका कपड़ा उतार लिया गया, कार्यालय, कारखानों, व्यापारों, सेन्टरों पर उससे काम लिया गया, औरतों को पश्चिम ने एक "ट्रेड मार्क" बना दिया, एक छोटे से डिब्बे में भी अगर नग्न फोटो न हो तो उस डिब्बे का बाज़ारों में कोई मूल्य ही नहीं, औरतों के आज़ादी के नाम पर उन्हें अपमानित किया गया, उसकी इज़्ज़त से खिलवाड़ किया गया।

आखिरकार यही होता है कि औरत न मायके की रह जाती है और न ही ससुराल की होती है, उसका जीवन बरबाद होकर रह जाता है, सुन्दरता के पुजारी तो कुछ मिल जाते हैं, परन्तु सुकून व इत्मिनान का जीवन नहीं मिलता, आज पश्चिमी समाज में खानदान की मुहब्बत समाप्त होती जा रही है, इसकी पूरी कोशिश है कि इस प्रकार की गल्तियों को छिपाए औरतों के ऊपर आज–कल अत्याचार हो रहा है परन्तु इस अत्याचार का कारण इस्लाम नहीं, बल्कि पश्चिमी देश की देन है आज औरत मजलूम है।

अगर इन अधिकारों पर नज़र डालें जो इस्लाम ने औरत को दिए हैं, तो पता चल जाएगा कि इस्लाम ने औरत को किसी प्रकार भी नीचे दर्जा पर नहीं रखा, मां बच्चों पर अधिकार रखती है, पति की संपत्ति में उसका हिस्सा है, संपत्ति के सम्बन्ध से अलग मालकाना अधिकार भी रखती है, व्यापार, खेती, और जीविका के लिए यह सब करने में कोई रूकावट नहीं, न ही शिक्षा के लिए कोई रूकावट है, परन्तु यह सब औरत की विशेषताओं को देखते हुए किया जाएगा।

अल्लाह तआला ने रसूल (सल्ल०) को औरतों से अच्छा व्यवहार करने का जितना आग्रह किया था उसका अन्दाज़ा हुजूर सल्ल० की हदीस से हो सकता है जिसमें आप ने इरशाद फरमाया –

"जिब्रईल (अ०) ने मुझे औरतों के बारे में इतनी ज़ोर से अहकाम दिए हैं कि मैंने ख़याल किया कि कहीं वह तलाक़ को हराम होने का हुक्म न ले आएं।"

यह है वह इज़्ज़त का सम्मान, जिसे अल्लाह ने इस्लामी शरीअत में

(शेष पृष्ठ २० पर)

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

शैतान के विषय में

कुर्आन से अनुवाद : और हमने तुम को पैदा किया फिर हम ही ने तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हमने फिरिश्तों को आदेश दिया कि आदम को सज्दा करो, पस सब ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने सजदा नहीं किया और वह सज्दा करने वालों में सम्मिलित न हुआ। अल्लाह तआ़ला ने पूछा कि तू सज्दा क्यों नहीं करता जब कि मैं तुझे आदेश दे चुका हूं ? कहने लगा मैं इससे (आदम अ़लैहिस्सलाम से) श्रेष्ठ हूं, आप ने मुझे आग से पैदा किया है और इस को मिट्टी से। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : तू आसमान से उतर, तुझ को यहां घमन्ड करने का अधिकार नहीं, निकल यहां से अब तू तुच्छों में से है। कहने लगा मुझे क़ियामत तक की छूट दीजिए। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तुझ को छूट दी गई। शैतान बोला इस कारण कि मेरी इस अवज्ञा पर आपने मुझे पथभ्रष्ट कर दिया है (छूट के अवसर में, प्रतिशोध में) मैं कसम खाता हूं कि आप के सत्य मार्ग पर मैं इनकी (अर्थात आदम (अ०) की सन्तान की) ताक में बैठूंगा फिर मैं धावा बोलूंगा उनके आगे से, उनके पीछे से उनके दाएं से, उनके बायें से, फिर आप उनके अधिकांश को शुक्र करने वाला (कृतज्ञ) न पाएंगे। (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया निकल यहां से तुच्छ तथा हीन होकर। इन (आदम की सन्तान) में से जो भी तेरे पीछे चलेगा (उनको मिला कर) तुम सब से जहन्नम भर दूंगा। (आदम अ़लैहिस्सलाम को आदेश दिया) ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो उसमें जहां से चाहो खाओ लेकिन (वृक्ष को बताते हुए) इस वृक्ष के पास न जाना (अर्थात उस के पास जाकर उस में से कुछ खा न लेना) नहीं तो तुम दोनों की गिन्ती अत्याचारियों में हो जाएगी। फिर शैतान ने उन दोनों के दिल में बात डाल कर बहकाया ताकि उनके छुपाने वाले अंगों को जो एक दूसरे से छुपे हुए थे खोल दे। (इस को किसी प्रकार जानकारी रही होगी कि ऐसा करते ही वह नग्न हो जाएंगे) कहने लगाः तुम्हारे रब ने तुम दोनों को इस वृक्ष से इस लिए रोका है कि कहीं तुम दोनों दो फ़िरिश्ते न बन जाओ या फिर यहां सदैव रहने वाले बन जाओ फिर उन दोनों से उस (इब्लीस) ने कसम खाई कि विश्वास करो मैं तुम दोनों का शुभचिन्तक हूं। फिर तो दोनों धोखा खा गये। पस जैसे ही दोनों ने उस वृक्ष से चखा उन के लज्जा वाले अंग खुल गये तो दोनों अपने (छुपाने वाले अंगों) पर जन्नत के (पेड़ों के) पत्ते रखने लगे। तब उन के रब ने उनको पुकारा (और कहा) क्या मैं ने तुम दोनों को उस वृक्ष से रोका न था ? और नहीं बताया था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है ? (दादा दादी) बोले ऐ हमारे रब हम ने अपने पर अति कर लिया यदि आप हम को क्षमा नहीं करेंगे तो निःसन्देह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तुम सब यहां से उतरो (दुन्या) में जाओ तुम में के कुछ, कुछ के दुश्मन रहें गे और फ़रमाया तुम को उस में (अर्थात दुन्या में) जीवन बिताना है और उसी में मरना है और उसी से (क़ियामत में) निकलना है। (देखिए सूर–ए–अ़राफ की आयतें ११ से २५ तक।)

अल्लाह की मसलहत फ़ैसला हुआ कि बअ़ज़ बअ़ज़ के दुशमन रहेंगे इसका यह मतलब निकला कि बअ़ज़ बअ़ज़ के दोस्त भी रहेंगे परन्तु सारे इन्सान एक नहीं हो सकते। यह वह सत्य है जिसे सारे इन्सान मानते हैं। (जारी)

जिस प्रकार मानव, पशु, पक्षी, पृथ्वी, आकाश, वृक्ष, पर्वत, नदी, समुद्र आदि ईश–सृष्टि (ख़ुदा की मख़लूक़) हैं उसी प्रकार जिन्न भी अल्लाह की एक जानदार मख़लूक (जीवधारी सृष्टि) हैं। उनकी सृष्टि ऐसे तत्व से हुई है कि वह हमारी आंखों से ओझल हैं। उनको मनुष्य जैसी बुद्धि भी है। उनमें अच्छे भी हैं और बुरे भी हैं।

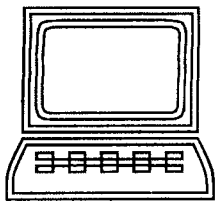

क्या आप अपने कम्प्यूटर से भयभीत हैं ?

सुहैब अरशद कुरैशी

सूबीरोज़ ने ३७ वर्ष की उम्र में ब्राडकास्टिंग कम्यूनीकेशन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक बार फिर यूनिवर्स्टि में प्रवेश ले लिया। वह कुछ कर गुजरने के इरादे से यूनिवर्सिटी में दाखिल हुई थीं लेकिन जब एडिटिंग और रेडियो प्रोडक्शन के दौरान उसका वास्ता कम्प्यूटर से पड़ा तो उसे यह भय था कि अगर उस ने कोई ग़लती कर दी तो क्या होगा ?

''सूबी'' ने ठानली कि वह कम्प्यूटर का नियम सीखेगी और उसको अपने प्रयोग में लाएगी। एक बार उसका भय जाता रहा तो कम्प्यूटर के भेद कमशः खुलते गए और आज नौसाल बाद उस की एक निजी पुरस्कृत वीडियो कम्पनी ''बीरोज प्रोडेक्शन'' के नाम से है और दफ़्तर में दो कम्प्यूटर्स उसके प्रयोग में हैं।

कम्प्यूटर प्रयोग करने में ''सू'' का यह भय असाधारण नहीं था। डील कम्प्यूटर कारपोरेशन एक अध्ययन के अनुसार १९९० की दहाई में तीस से चालिस प्रतिशत लोग टेक्नालोजी विशेषकर कम्प्यूटर टेकनालोजी से भयभीत हैं।

वर्तमान में कम्प्यूटर से बिल्कुल अलग थलग हो जाना सम्भव ही नहीं। वह सेवाएं जिन के लिए कम्प्यूटर का जाना अनिवार्य है, १९८४ ई०में २५ प्रतिशत थी।

आज ४२ प्रतिशत हो चुकी हैं। यद्यपि सब नहीं परन्तु बहुत से अधिकारी पदों के लिए कम्प्यूटर की योग्यता आवश्यक है। एक सर्वे के अनुसार आज भी कार्यालय सहायक और अधिकारी सेवाओं की एक बड़ी संख्या कम्प्यूटर प्रयोग करते हुए हिचकिचाती है। यद्यपि लोग कम्प्यूटर को बहुत कठिन समझते हैं लेकिन वास्तव में इसमें निपुणता प्राप्त करना बहुत आसान है। विशेषज्ञ इसके लिए निम्नलिखित कार्यविधियों की सलाह देते हैं – अपरिचित पारभाषिक शब्दों से मत घबराइये। कम्प्यूटर खरीदने से पहले सोच लीजिए कि आपको इस से क्या काम लेने हैं ? इसके बाद अपने उद्देश्य की एक सूची बना लीजिए। अगर कम्प्यूटर बेचने वाला एक अस्पष्ट या समझ में न आनेवाला प्रश्न करे तो आप कुछ यूं उत्तर दे सकते हैं ''मुझे मालूम नहीं, आप ही बता दीजिए कि ''मुझे अपने काम के लिए किस कम्प्यूटर की आवश्यकता है जो यह हैं .....'' अब वह आप को आसान शब्दों में उत्तर देगा। अगर आप का कम्प्यूटर पुराना हो चुका है और अब आम इस्तेमाल में नहीं रहा तो परेशान होने की जरूरत नहीं। आप केवल भविष्य के कुछ वर्षों की निजी आवश्यकताओं को सामने रखिये। अब आप कम्प्यूटर खरीद चुके हैं तो अपनी ज़रूरत के अनुसार केवल बुन्यादी भाषा सीखें एक मिसाल के द्वारा आप यह बात भलीभांति समझ सकते हैं। अगर आप को बढ़ई बनना है तो आप सबसे पहले घर नहीं बनाएंगे बल्कि पक्षियों के पिजड़े या मेज़ कुर्सी ऐसी साधारण चीजों से सीखना शुरू करेंगे । इस प्रकार ज्यू ज्यूं आप को नये काम करना होंगे त्यूं त्यूं आप कम्प्यूटर की नई चीजें सीखते चले जाएंगे।

केवल अपना काम सामने रखिये–

जिस प्रकार आप को यह जानने की जरूरत नहीं कि आप का माइक्रो वेव चूल्हा किस प्रकार खाने की चीज़ें गर्म करता है, बिल्कुल उसी तरह आप को यह मालूम करने की ज़रूरत नहीं कि आपका कम्प्यूटर कोई काम किस प्रकार सम्पन्न करता है। कम्प्यूटर मैनुअल को आप के काम में रूकावट नही बनना चाहिए क्योंकि आपका मुख्य उद्देश्य अपने काम पर ध्यान देकर वांछित उद्देश्य प्राप्त करना है। कम्प्यूटर की बटन (Key) दबाते समय बहुत से लोग डरते हैं कि अगर उन्होंने ग़लत बटन दबा दिया तो क्या होगा? अपनी ग़लती पर मत घबराइये। जब तक आप कम्प्यूटर से कहेंगे नहीं वह आप की ग़लतियां याद नहीं रखेगा।

डेटा के नष्ट हो जाने पर परेशान होने की आवश्यकता नहीं बहुत से कम्प्यूटरों में यह विशेषता होती है कि वह नष्ट हुए डेटा को पहली दशा में ला सकेंगे या पिछली कमाण्ड निरस्त कर सकेंगे।

कम्प्यूटर के एक माहिर का कहना है कि यदि आप तीन कामों में निपुणता प्राप्त कर लेते हैं – (१) डेटा

सुरक्षित करना और छापना (२) ई मेल भेजना और प्राप्त करना (३) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर वेब के द्वारा डेटा फाईल का सर्वे करना ..... तो दुन्या के बहुत से दूसरे लोगों की तरह आप भी कम्प्यूटर के माहिर हो जा जाएंगे।

एक प्रसिद्ध समाचार पत्र की सम्पादक कार्ल टाइपराइटर प्रयोग करती थीं। उनके पति १९८७ में कम्प्यूटर ख़रीद कर घर लाए। काल का पहला प्रश्ना यह था कि "हम इस का क्या करेंगे। इस प्रश्न का कारण यह भय था कि शायद वह कभी कम्प्यूटर प्रयोग करना सीख न सकेंगी परन्तु काल न धीरे धीरे शुरूआत की और बुन्यादी चीज़ें सीखती चली गईं। अब वह एक इंश्योरेंस कम्पनी में काम करती हैं और एक दूसरा कम्प्यूटर सिस्टम उनके प्रयोग में है। जब कभी उन्हें कोई कठिनाई पेश आती है तो वह कागज के एक छोटे से टुकड़े पर संक्षिप्त नोट लिख लेती हैं और उसे याद कर लेती है।

दूसरों से भी सहायता लीजिए

एक अध्यापक की खोज में आप अपने क्षेत्र के कम्प्यूटर या कम्प्यूटर क्लब से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रयोग करने वाला ग्रुप (**User Group**) आप से साल के बाद देय धनराशि वसूल कर सकता है और आपके मार्गदर्शन और सूचनाएं एकत्र करने के साथ–साथ नेटवर्क की सुविधा भी प्रदान करता है।

प्रयोग करता ग्रुप की मीटिंग के बीच किसी ऐसे व्यक्ति से एक सम्बन्ध बनालीजिए जिसे आप तुरंत और आसानी से सम्पर्क कर सकें। यह आवश्यक नहीं कि आप सब से अधिक पढ़े लिखे व्यक्ति ही को चुनें। ऐसा व्यक्ति लाभप्रद रहेगा जिसने वह चीज़ें हाल ही में सीखी हों जो आप अब सीखना चाहते हैं।

अपने दिल से कम्प्यूटर का भय निकाल कर आप अपने जीवन में वह रंग भर सकते हैं जिन का आप पहले अनुमान भी नहीं कर सकते थे।

एक बार एक सफल वकील जिनको स्कूल में पहली बार कम्प्यूटर प्रयोग करना पड़ा, जब उन्होंने अपने टाइप किये हुए कागज को देखा तो उन्हें बड़ी गलानि महसूस हुई। आज कल वह कम्प्यूटर की बुन्याद पर कानूनी रिसर्च का काम प्रारम्भ कर रहे हैं और कहते हैं "मैं कम्प्यूटर का माहिर हूं यह अनुभव कितना सुन्दर है, कभी मैं दूसरों से सहायता का इच्छुक हुआ था अब दूसरे मुझ से मदद लेने आते हैं।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १६ का शेष)

औरतों को दिया है, और यह है वह इस्लामी शिक्षा जिस पर अमल करना, मुसलमानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, अशिक्षित युग में ऊंचे घराने की औरतों को अधिकार मिला था, परन्तु इस्लामी ने आकर नीचे से नीचे घराने की औरतों को भी इससे बहुत अधिक अधिकार दिए, और उनकादर्जा इतना ऊंचा कर किया कि जिसको उन्होंने कभी सोचा भी न था।

परन्तु "मीडिया" के द्वारा पूरे संसार में दूसरी ही बात कही जाती है, इसका कारण यह है कि पश्चिम में औरत की आज़ादी का जो विचार सामने आया कि लज़्ज़त, कुकर्म आदि में उनका प्रयोग करना, यह बात उन्हें खूब अच्छी तरह मालूम है कि इस्लाम इसका बहुत विरोध ी है, यही बात पश्चिम को खलती है।

अगर मस्जिद में नमाज़ के सम्बन्ध ा में कोई बात किसी छोटी सी मस्जिद का इमाम भी कहता है तो उसको मीडिया के द्वारा समय का एक महत्वपूर्ण समस्या कह कर सारे संसार में एक तूफान खड़ा कर दिया जाता है, इससे पहले तलाक़ के बारे में यही किया गया था।

अरब के ऊंचे घरानों में औरतों को शिक्षा प्राप्त करने का बिल्कुल रवाज न था उनके मर्द शिक्षा को बहुत बुरा समझते थे, परन्तु इस्लाम ने आकर जहां मर्दों के लिए शिक्षा को प्राप्त करने का महत्व दिया है, वहीं औरतों के लिए शिक्षा को भी महत्व पूर्ण बताया है।

इस्लाम ने औरत और मर्द को एक जैसे इन्सान बनाने के बावजूद मर्द को औरत का संरक्षक बनाया और दोनों को अमल करने के रास्ते अलग अलग बताए, यह बात बहुत दिनों से कठिन आलोचना बनी हुई थी, और पश्चिम ने मर्दों की संरक्षता को समाप्त करने के लिए नई व्यवस्था चलाने की कोशिश की, ताकि मर्दों की संरक्षता समाप्त होकर औरतों का समाज आगे आ सके।

परन्तु आज इस कोशिश को नाकाम बना दिया गया, नये रिसर्च और उन्नति वाले समाज के अनुभव से पता चल चुका है कि इस्लाम की शिक्षाएं ही इन्सानियत के अनुसार हैं, अल्लाह तआला ने मर्दों औरतों में जो शारीरिक अन्तर रखा है, उसी प्रकार उनकी ज़िम्मेदारियों में भी अन्तर रखा है, औरतों की विशेषताओं को सामने रखते हुए इस्लाम ने उन्हें समाज के निर्माण और आपस में मिल जुल कर ज़िन्दगी को पूरा करने में महत्वूपर्ण रोल अदा करने की दअवत दी है।

●●●

आलमगीर के युग में हिन्दुओं को राजनैतिक स्वतंत्रता

आमिना उस्मानी

राज्य के किसी भी व्यक्ति को औरंगेजब के पास तक पहुंचने में किसी प्रकार की रोकटोक न होती थी। साधारण मनुष्य भी उनसे हर समय मिल सकता था इस मामले में किसी धर्म व जाति का भेदभाव न था। इसके अतिरिक्त इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि राज्य के उच्च पदों पर हज़ारों गैर मुस्लिम काम करते थे। जसवन्त सिंह, जय सिंह शाही सेना के प्रमुख थे रघुनाथ खत्री, राय रायान और बनवारी लाल मुन्शी वे लोग थे जो शासन के प्रशासनिक विभाग में उच्च पदों पर विराजमान थे जिन पर बादशाह पूरी तरह भरोसा करता था। इसके अतिरिक्त पारसी, ईसाई और यहूदी भी अपनी योग्यता के अनुसार विभिन्न विभागों में काम करते थे और बादशाह सरकारी नौकरियों के बारे में धार्मिक भेदभाव नहीं करता था मिस्टर टी डब्लू आर्नाल्ड अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "प्रीचिंग आफ इस्लाम" में आलमगीर के भेद भाव पक्षपात से स्वच्छ उदारवादी व्यक्तित्व की एक घटना के बारे में लिखता है –

"औरंगजेब के आदेशों व पत्रों की क़लमी पांडुलिपी जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई उसमें धार्मिक स्वतंत्रता का वह चमकता दमकता उसूल मौजूद है जो एक बादशाह को ग़ैर मजहब के लोगों के साथ बरतना चाहिए जिस घटना के बारे में यह उसूल बताया गया है वह यह है कि आलमगीर को किसी व्यक्ति ने प्रार्थना पत्र दिया कि दो पारसी सेवक वेतन बांटने पर नियुक्त हैं इस आधार पर उनको पद से हटा दिया जाए क्योंकि कुर्आन पाक में आया है ––

"ऐ ईमान वालो ! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त मत जानो।" (अल मुमतहिना ७१)

औरंगजेब आलमगीर ने इस पत्र के जवाब में इसी पत्र पर लिखा–

"यह आयत इस अवसर के लिए नहीं है और इस कथन की पुष्टि में यह आयत लिखी "तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन," बादशाह ने यह भी लिखा कि जो आयत प्रार्थनाकर्ता ने लिखी है यदि यही हमारे शासन का संविधान होता तो हमें चाहिए था कि इस देश के सब राजाओं और उनकी जनता को समाप्त कर देते मगर यह किस तरह हो सकता है। शाही व सरकारी नौकरियां लोगों को उनकी योग्यता के अनुसार मिलेंगी इसके अलावा किसी अन्य आधार पर नहीं मिल सकतीं।"(प्रीचिंग आफ इस्लाम–२८)

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की पुस्तक का एक प्रसंग जो रिसाला मआरिफ़ के अक्टूबर १९५० के अंक में छपा था इस प्रकार है –

शाहजहां ने आंध्र के राजा इन्द्रभान को निरन्तर आदेश के उल्लंघन करने के अपराध में कैद कर दिया था। जब औरंगजेब दकन का सूबेदार हुआ तो उसने शाहजहां से इन्द्रभान की रिहाई के लिए कड़ा आग्रह किया लेकिन शाहजहां कुछ ऐसा नाराज़ था कि उसने आलमगीर को लिख भेजा कि इन्द्रभान ने हमें बहुत अधिक नाराज किया है फिर भी यदि वह मुसलमान हो जाए तो उसे रिहाई मिल सकती है। औरंगजेब ने शाहजहां की इस बात का सख्त विरोध किया और शाहजहां को लिखा कि इस शर्त पर अमल नहीं किया जा सकता क्योंकि यह इस्लामी नियमों के विरुद्ध है और संकीर्णता पर आधारित है और फिर लिखा कि यदि उसे रिहा करना ही है तो उन शर्तों पर ही रिहा किया जाए जो स्वयं उसने पेश की है।"("इंडिया डिवाइड"–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद)

कुछ ऐतिहासिक हवाले

डॉक्टर साहब ने आगे लिखा है कि–

"आलमगीर ने एलचयूर में दीवानी की जगह खाली हुई तो शाहजहां से एक राजपूत अफसर की ज़ोरदार सिफारिश की लेकिन किसी कारणवश शाहजहां ने इसे स्वीकार न किया। औरंगजेब ने दोबारा लिखा कि इससे अच्छा आदमी नहीं मिल सकता। अतएव शाहजहां को इसी व्यक्ति की नियुक्ति करना पड़ी।" (रुक़्क़आते आलमगीर–११४)

तारीख़े हिन्द के लेखक श्री प्रोफैसर राम प्रसाद जी खोसला पटना

विश्व विद्यालय लिखते हैं कि –

"औरंगज़ेब आ़लमगीर ने नौकरी के लिए इस्लाम की शर्त कभी नहीं लगायी। बादशाह इस्लाम का रक्षक अवश्य समझा जाता था परन्तु ग़ैर मुस्लिम जनता पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती व दबाव नहीं था। बाबर से आरंगजेब तक मुग़लों का इतिहास संकीर्णता व साम्प्रदायिक कड़वाहट से पाक है।"

औरंगजेब अपनी जनता के योग्य व उत्तम व्यक्तियों का साहस बढ़ाता था। इस सम्बन्ध में आ़लमगीर का एक पत्र पढ़ने योग्य है जो उसने मालवा सूबे में एक विद्रोही गिरोह की पराजय और शहज़ादे की विजय पर लिखा था जो इस लड़ाई में शामिल था।

"तुम्हारे बहुत अच्छे सेनापति त्रिलोक चन्द्र के प्रयासों से यह विजय प्राप्त हुई है। अतः उसे राय की उपाधि देकर घोड़ा, तलवार और शाही वस्त्र आदि पुरस्कार दे रहा हूं। तुम भी उसके साथ ऐसी कृपा व हमदर्दी करो कि वह अपने साथियों में श्रेष्ठ व उच्च हो और दूसरे शाही नौकरों में अच्छे काम व अच्छे परिणाम की आशा और अच्छी सेवा करने का उत्साह पैदा हो।'

(दावत–२२अक्टूबर १६६३)

हिन्दू मैत्री की सच्ची कहानियां

यह एक तथ्य है कि आ़लमगीर ग़ैर मुस्लिम जनता के साथ न्याय और मानवता का व्यवहार करता था। उसी के शासनकाल में पंजाब के सूबेदार और कुम्हार की लड़की की घटना बहुत सी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है अर्थात पंजाब के सूबेदार की नीयत एक कुम्हार की लड़की को देखकर बदल गयी थी उसने कुम्हार को बुलाकर लड़की की मांग की और कहा कि हम एक महीने के बाद इधर दौरे पर आएंगे उस समय लड़की को तैयार रखना। कुम्हार एक सम्मानित व्यक्ति था बेचारा इस आदेश को सुनकर बहुत दुखी हुआ लेकिन उसकी पत्नी ने उसे उत्साहित किया कि दिल्ली का बादशाह बड़ा नेक और न्यायप्रिय है वह फ़रियादी को निराश नहीं लौटाता। तुम उसके पास जाओ और बताओ कि हम हिन्दू हैं आपका सूबेदार हमारा धर्म भ्रष्ट करके हमारी मासूम कोमल सी लड़की को अपने घर में रखना चाहता है यह बड़ा जुल्म व अत्याचार है घोर अन्याय है आप हमारी सहायता करो और हमें उस दुष्ट से बचाओ।

अतएव कुम्हार अपनी पत्नी के आग्रह पर दिल्ली आया और शहंशाह आलमगीर को रो रोकर अपनी विपदा सुनायी। इस दर्द भरी कहानी को सुनकर आ़लमगीर औरंगेजब की आंखें सुर्ख़ हो गईं। उसने उस दुखी कुम्हार को संतुष्ट किया और विश्वास दिलाया कि "तुम्हारी बेटी है तुम्हारा अनादर हमारा अनादर है हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे और जिस दिन उस दुष्ट कारिन्दे ने तुम्हारे घर आने का वायदा किया है हम उसके आने से पहले ही तुम्हारे घर मौजूद होंगे। तुम दुखी न हो। कोई चिन्ता मत करो। सन्तुष्ट होकर घर जाओ। तुम्हारी इ़ज़्ज़त व सम्मान की रक्षा की जाएगी यह हमारा कर्तव्य है।"

आ़लमगीर की इन बातों को सुनकर कुम्हार खुशी खुशी अपने घर लौट आया। आलमगीर ने कुम्हार से जो वायदा किया था उसके अनुसार वह अकेला उस ख़ास दिन उस कुम्हार के घर पहुंच गया और स्वयं अपनी तलवार से उस दुष्ट व ज़ालिम कारिन्दे की गर्दन उड़ा दी। यह ऐतिहासिक घटना औरंजेब के न्याय और हिन्दू जनता के प्रति उसकी दया भावना का सहानुभूति का एक उदाहरण है।

यह कहानी एक सिख विद्वान ने भी मालवा इतिहास भाग १ पृष्ठ ११८ पर लिखी है।

औरंगज़ेब ने बनारस के एक विद्वान ब्राहमण का वज़ीफ़ा दो हजार रूपया वार्षिक निर्धारित किया था और सुन्दर ब्राहमण को कौकिब शायर की उपाधि से नवाज़ कर एक बड़ी जागीर प्रदान की।

औरंगज़ेब और धार्मिक स्वतंत्रता

धर्म का मामला शीशे जैसा है बड़ा ही संवेदनशील और नाजुक । थोड़ी सी खनक से उसमें बाल पड़ जाता है इसलिए इसकी रक्षा बड़े ही ताम झाम के साथ की जाती है क़दम कदम पर इसका ध्यान रखा जाता है कि कहीं इसमें ठेस न लग जाए। ऐसे में भला धर्म के मामले में ज़बरदस्ती कौन अपना धर्म बदलने को तैयार हो सकता है परन्तु बड़े दुख की बात है कि आ़लमगीर औरंगज़ेब पर यह सबसे बड़ा आरोप है कि जब तक वह सवा मन जनेऊ नहीं उतरवा लेता था उस समय तक खाना खाने नहीं बैठता था जिसका अर्थ यह है कि हर दिन चालीस पचास हजार हिन्दुओं को या तो मुसलमान बनाया जाता था या उनकी हत्या कर दी जाती थी परन्तु इस आरोप का खंडन तो इस तरह से हो जाता है कि आज भी हिन्दुओं की इस देश में एक बड़ी संख्या मौजूद है और मुसलमानों की जनसंख्या स्वयं औरंगज़ेब के ज़माने में एक करोड़ से आगे नहीं

बढ़ी।

अब रही, सही बात की खोज तो इसके लिए हम अपनी राय नहीं, वरन् कुछ विशिष्ठ ग़ैर मुस्लिमों की न्याय पर आधारित राय पेश करते हैं जिससे अंदाजा लगाया जा सके कि यद्यपि धर्म उसके जीवन का एक अनिवार्य अंश था परन्तु तंग दिली उसे छू तक नहीं गयी थी। केवल धर्म के मतभेदों के आधार पर किसी को कष्ट देना या परेशान करना औरंगज़ेब को कदापि पसन्द नहीं था।

बंगाली इतिहासकार सर जादू नाथ सरकार "तारीख़े औरंगज़ेब" में लिखते हैं –

औरंगजेब की तारीख़ हिन्दुस्तान के साठ साल की अत्यन्त उज्जवल व रोशन तारीख है। उसने किसी हिन्दू को बलपूर्वक मुसलमान नहीं बनाया, न शान्ति के ज़माने में उसने किसी हिन्दू की जान ली। उदारता में किसी तरह भी अपने पर्वू के मुग़ल बादशाहों से कम न था।"

सर जादू नाथ सरकार आगे लिखते हैं –

"बनारस की मस्जिद ज्ञानवापी के बारे मे कहा जाता है कि औरंगज़ेब ने मन्दिर तोड़कर इसे बनवाया था इसकी वास्तविकता यह है कि इस स्थान पर कोई मन्दिर उस ज़माने में न था बल्कि अकबर के दीने इलाही का एक संस्थान था जिसे १६२७ में शहंशाह ने तोड़कर मस्जिद बनवा दी थी और उसका ऐतिहासिक नाम 'ऐवाने शरीअत' रखा था।"

एक अंग्रेज पर्यटक की आँखों देखी गवाही

हेमिल्टन नामक एक अंग्रेज़ पर्यटक आलमगीर के समय में हिन्दुस्तान आया था। वह अपने सफ़र नामें में विभिन्न शहरों का आंखों देखा हाल लिखते हुए शहरे ठट्ट के बारे में लिखता है कि –

'हुकूमत का मात्र धर्म इस्लाम है परन्तु संख्या में यदि दस हिन्दू हैं तो एक मुसलमान। हिन्दुओं के साथ उदारता व भाईचारा पूरी तरह बरता जाता है। वे अपने ब्रत रखते हैं पूजा पाठ करते हैं और त्योहारों को उसी तरह मनाते हैं जैसे कि अगले जमाने में मनाते थे जबकि बादशाहत हिन्दुओं की थी।" (सफरनामा हेमिल्टन १–१२७–१२८)

हेमिल्टन अपने इसी सफ़रनामे में सूरत शहर का उल्लेख करते हुए लिखता है –

"इस शहर में लगभग सौ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं परन्तु उनके बीच कभी कोई झगड़ा उनके अक़ीदे व पूजा पाठ के तरीक़ों के बारे में नहीं होता हर एक को अधिकार है कि जिस तरह चाहे अपने तरीके पर अपने ईश्वर की उपासना करे। केवल धार्मिक मतभेदों के आधार पर किसी को कष्ट पहुंचाना या तकलीफ देना इन मुस्लिम लोगों में नहीं पाया जाता। (सफरनामा हेमिल्टन–१–१६२)

डाक्टर बर्नियर का आंखों देखा हाल

एक दूसरे फ्रांसीसी पर्यटक डाक्टर बर्नियर दिल्ली के सूर्यग्रहण (१६६६) के स्नान और पूजा पाठ के दृश्य का हाल लिखते हैं – 'मुस्लिम शासकों की शासन प्रणाली का एक आदर्श नमूना यह है कि वे हिन्दुओं की रस्मों में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते और अपनी धार्मिक रस्में पूरी करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं।"

डॉ० बर्नियर के बयान से इस बात की भी पुष्टि होती है कि उस समय हिन्दुओं में कम से कम पच्चीस हजार ईसाई आबाद थे जो अपनी धार्मिक रस्मों को पूरी स्वतंत्रता के साथ अदा करते थे। इस मामले में स्वतंत्रता का यह हाल था कि वे अपने धर्म का प्रचार भी खुलकर कर सकते थे और उनके पादरियों ने मदरसे और खानकाहें भी बना ली थीं। (रिसाला मौलवी, रबीउस्सानी पृष्ठ ३३)

मिस्टर डब्ल्यू आर्नाल्ड की बहुमूल्य राय

बलपूर्वक मुसलमान बनाने के संबंध में लिखते हैं –

"औरंगज़ेब के शासन काल की इतिहास की पुस्तकों में जहां तक मैंने तलाश किया है कि बलपूर्वक मुसलमान बनाने का कहीं का भी उल्लेख नहीं मिलता।"

(प्रीचिंग आफ इस्लाम – पृष्ठ ३७६)

इतिहासकार एनफिस्टन का वक्तव्य

एनफिस्ट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "तारीखे हिन्द" में लिखा है– "यह प्रमाणित नहीं होता है कि किसी हिन्दू को उसके धर्म के साथ औरंगज़ेब ने क़त्लकिया हो या कैद या जुर्माना की सजा दी हो या किसी व्यक्ति पर खुले तौर पर अपने धर्म के अनुसार उपासना करने के कारण आपत्ति की गयी हो।"

विदेशियों के इस आंखों देखे वक्तव्यों व गवाहियों के बाद अब अपने ही देश के कुछ न्यायप्रिय लेखकों व भले हिन्दू विद्वानों के वक्तव्य भी हम

यहां प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि उनकी रोशनी में आ़लमगीर औरंगज़ेब का सही चित्र सामने आ सके।

हिन्दू मन्दिर और आ़लमगीर

एक प्रसिद्ध आर्य समाजी प्रचारक महता जनीमी जी०बी०ए० अपनी पुस्तक "औरंगज़ेब की जिन्दगी का रोशन पहलू" में हिन्दुओं के दिल दुखाने व उन पर सख़्ती करने के आरोप का खंडन करते हुए लिखते हैं कि यह पूरी तरह निरी बकवास है निराधार आरोप है। इस सम्बन्ध में उन्होंने आ़लमगीर का एक आदेश भी नक़ल किया है जिसकी असल प्रतिलिपि रायल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल के पास सुरक्षित है।

फ़रमानेशाही २८ फरवरी १६५६ ई०

हमेशा धर्मशास्त्र के अनुसार यह तय पा चुका है और फ़तवा दिया जा चुका है कि प्राचीन मन्दिरों को कदापि न तोड़ा जाए। दरबार में यह ख़बर प्राप्त हुई कि कुछ अफ़सरों ने हिन्दुओं को जो बनारस में रह रहे हैं आतंकित कर रखा है और आसपास के क्षेत्र के रहने वालों और मुख्य रूप से उन ब्राहमणों को उनके प्राचीन मन्दिरों से निकालना चाहते हैं। अतः हमारा शही फ़रमान (आदेश) यह है कि आप उन अफ़सरों को निर्देश दें कि आगे कोई स्थानीय अफसर अवैध रूप से ब्राहमणों और उन हिन्दुओं को जो उन स्थानों पर रहते हैं न तो किसी प्रकार की यातना व कष्ट दे न उनके कारोबार में हस्तक्षेप करें।

बाबू निरंजन सेन का वक्तव्य

इस घटना को बाबू निरंजन सेन बी ए, एल एल बी एडवोकेट ने 'बनारस सिटी' नामक पुस्तक में इस प्रकार लिखा है –

"औरंगज़ेब को खबर पहुंची कि बनारस के कुछ अफ़सर ब्राहमणों को सताते हैं तो उसने अबुल हसन गवर्नर को आदेश भेजा कि हमारे धर्म शास्त्र का हुक्म है, कि मन्दिर न ढाए जाएं और न उनके पुजारियों पर सख़्ती की जाये। अतः हुक्म दिया जाता है कि कोई व्यक्ति ब्राहमण या किसी हिन्दू पर किसी प्रकार का दबाव न डाले।"

एक ही मामले में दो गवाहियां इसके सही होने की पक्की दलील है। इससे पता चलता है कि आ़लमगीर के कार्यकाल में मन्दिरों की रक्षा की जाती थी। यदि इसके विरुद्ध वह अमल करता तो शायद हिन्दुस्तान में एक मन्दिर भी दिखाई न देता। प्रसिद्ध इस्लामी इतिहासकार मौलाना शिब्ली इस सम्बन्ध में लिखते हैं –

"आ़लमगीर दकन में २५ साल तक रहा। इस क्षेत्र में हजारों बुतखाने व मन्दिर मौजूद थे लेकिन इतिहास में एक शब्द भी नहीं मिलता कि उसने किसी मन्दिर को तोड़ने की नीयत की हो।'

"एलोरा अजन्ता के प्रसिद्ध मन्दिरों में सैकड़कों बुत और तस्वीरें हैं। आलमगीर इस क्षेत्र में एलोरा से केवल दो मील की दूरी पर दफन है बड़े बड़े बुजुर्गों के मजार यहां मौजूद हैं जो आ़लमगीर से पहले गुजरे हैं परन्तु ये बुत और तस्वीरें अपनी जगह आज तक सुरक्षित हैं। (औरंगज़ेब आ़लमगीर, लेखक शिब्ली पृष्ठ–५६)

मन्दिरों को दान और जागीरें

इतिहास के पन्ने तो इसके विपरीत यह बताते हैं कि औरंगज़ेब ने मन्दिरों की देखरेख के लिए विभाग नियुक्त किये जो पहले नहीं थे और इन मन्दिरों को दान की राशि भेंट की तथा जागीरें प्रदान कीं। श्री बाबू नारायण पूर्व मैनेजर रियासत रामनगर घमेड़ी जिला बाराबंकी ने 'सियासत' समाचार पत्र लाहौर के १८ जुलाई १९२४ के प्रशासन में बड़ी खोजबीन के बाद औरंगज़ेब की पक्षपात से स्वच्छ ज़िन्दगी के बारे में लिखा था। उस लेख का कुछ अंश हम यहां दे रहे हैं।

१. ज़िला सीतापुर सिरका हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध धर्मस्थल है सिरका के महन्त के पास बादशाह आ़लमगीर की प्रदान की हुई एक शाही सनद (प्रमाण पत्र) भी मौजूद है जिसके द्वारा बहुत से गांव महन्त जी को धार्मिक कामों के ख़र्च के लिए प्रदान किए गए थे और जो आज तक इसी प्रकार चले आ रहे हैं।

२. मथुरा में बलदेवजी का मन्दिर है। इस मन्दिर के ख़र्चों के लिए बादशाह औरंगजेब ने बहुत सी जागीरें प्रदान कीं जो आज भी मन्दिर के पास मौजूद हैं।

३. इलाहाबाद में यमुना के किनारे अकबर का बनवाया हुआ क़िला है और उसमें एक विशाल मन्दिर है वहां सैकड़ों वर्ष पुरानी मूर्तियां हैं वह औरंगजेब के कब्जे में था लेकिन उस मन्दिर को किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहुंचााय गया।

४. आजकल यह तरीका हो गया है कि जो मूर्तियां कहीं टूटी हुई मिलती हैं उनको लोग औरंगजेब की तोड़ी हुई बताते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है

कि वह स्वामी शंकराचार्य के समय में तोड़ी गयी थीं। काशी विश्वनाथ जी का मन्दिर अवश्य औरंगज़ेब के शासन में तोड़ा गया लेकिन उसके तोड़े जाने का कारण धार्मिक पक्षपात नहीं, बल्कि उसके पीछे राजनैतिक आवश्यकता मालूम होती है क्यों कि यह मन्दिर वाममार्ग का अड्डा बन गया था और इसके कारण लोगों के चरित्र व आचरण में बिगाड़ पैदा हो रहा था।" (सियासत लाहौर ८ जुलाई १९६२)

इसी प्रकार का एक वक्तव्य पंडित सुन्दर लाल जी का भी है वे कहते हैं "हिन्दुस्तान में असंख्य मन्दिर थे यदि वास्तव में औरंगजेब मन्दिरों का दुश्मन होता, तो इन सब मन्दिरों को एक एक करके तोड़ डालता मगर उसने ऐसा नहीं किया, हां वे मन्दिर अवश्य तोड़े गए जहां उसके विरुद्ध षडयंत्र रचे जाते थे और जो विद्रोह व राजनैतिक गतिविधियों के अड्डे बन गए थे अतएव षडयंत्रों के कारण तो औरंगजेब ने मस्जिदों को भी जानबूझ कर तोड़ा है।"

प्रोफेसर ईश्वर प्रसाद जो इस दौर के प्रमाणिक इतिहासकार हैं इस बात को अपनी पुस्तक में स्वीकारते हैं कि औरंगजेब ने मन्दिरों को धन व जागीरें प्रदानकी हैं अतएव आप लिखते हैं –

"मुल्तान में तोतला माई के मन्दिर को एक सौ रूपये वार्षिक की जागीर औरंगजेब ने प्रदान की। देहरादून के गुरुद्वारे को जागीर दी। हिन्दुओं पर यात्रा कर जो पहले से चला आ रहा था खत्म किया।"

कोयला, मंजन या टूथ पेस्ट से दान्त साफ करने से रोज़ा मकरूह होगा।

रोज़े की नीयत :

रोज़े के सहीह होने के लिए नीयत ज़रूरी है अगर बिना नीयत के रखा जाए तो दुरुस्त न होगा जैसे किसी ने दिनभर खाया पिया नहीं मगर रोज़े की नीयत नहीं की तो रोज़ा नहीं होगा। ज़बान से नीयत करना जाइज़ है। ज़रूरी नहीं। दिल में रोज़े का इरादा कर लेना काफी (पर्याप्त) है। रोजा रखने के लिए सहरी खाई तो इस से भी नीयत हो जाएगी। नीयत चाहे जिस ज़बान में करें अरबी में जरूरी नहीं। यूं सोच लें कि मैं आज के रोज़े की नीयत करता हूं। कहना चाहें तो यही जबान से कह ले कि मैं आज के रोज़े की नियत करता हूं। अरबी में यूं कह सकते हैं ' नवैतु सौमलयौम। रमज़ान के रोज़े की नीयत रात ही में कर ले दोपहर से पहले तक कर सकते हैं। दोपहर के बाद नीयत करने से रमज़ान का रोज़ा न होगा।

वह बातें जिन से न रोज़ा टूटता है न मकरूह होता है

सर पर तेल डालना । बदन पर तेल मलना। सुर्मा लगाना। मिस्वाक करना। खुशबू लगाना। भूले से खा पी लेना। खुद बखुद क़ै हो जाना जियादा हो या कम। मुंह का थूक अन्दर ही अन्दर निगल जाना । मक्खी या धुंवा का खुद से हलक से नीचे उतर जाना। सोते में इहतिलाम (ख्वाब) हो जाना।

इअ़तिकाफ़

रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में या दूसरे दिनों में कारोबार और बीवी बच्चों से अलग होकर मस्जिद में ठहरने को इअ़तिकाफ़ कहते हैं।

इअ़तिकाफ़ ऐसी सुन्नत मुअक्किदा है कि अगर बस्ती का एक शख़्स कर ले तो सब की तरफ से अदा हो जाएगा। अगर बस्ती में कोई इअ़तिकाफ़ न करेगा तो बस्ती के सभी लोग सुन्नत छोड़ने में गुनाहगार होंगे।

औरत अगर इअ़तिकाफ़ करना चाहे तो घर के किसी भाग में बैठ जाएं फिर वहां से शरअ़ी आदेश के बिना न निकले।

इअ़तिकाफ के लिए नीयत और पाक साफ रहना ज़रूरी है।

२११६ ई० में महा प्रलय ?

(अन्तरिक्ष विशेषज्ञयों की नज़र में)

सै०मु० सलीम (नैनीताल)

खगोल शास्त्रियों ने चेतावनी दी है कि १४ अगस्त २११६ को यह भूमंडल एक भयानक तबाही से दो चार हो सकता है और हर प्रकार के जीवन का अन्त हो जाएगा क्योंकि बर्फ के तूदों और पथरीली चट्टानों से भरा हुआ एक छोटा पुच्छल तारा (Comet) जो कि ५ किली मीटर चौड़ा है १४ अगस्त २११६ को पृथवी से टकरा कर भूमंडल को चकनाचूर कर देगा। इसके टकराने से जो धमाका होगा, वह दस लाख से अधिक ऐटम बमों के एक साथ फटने वाले धमाके से भी अधिक प्रबल होगा परिणाम स्वरूप मानव जीवन के साथ भूमण्डल पर हर प्रकार के जीवन का बिल्कुल सफाया हो जाएगा और ब्रह्माण्ड में घटाटोप अन्धकार फैलजाएगा। २५ अक्टूबर १९९२ को सिडनी में आयोजित खगोल शास्त्र के विशेषज्ञों की कान्फ्रेंस में ऐंग्लो आस्ट्रेलियन खगोल वैधशाला के खगोल विशेषज्ञ डनकन स्टली ने बतलाया कि इस पुच्छल तारे को जिसे पहली बार १५ अक्टूबर १९८८ को भूमण्डल की ओर ६० किलोमीटर प्रति सेकेण्ड की रफ़्तार से बढ़ते हुए देखा गया है, जब वह पृथ्वी के धरातल से टकराएगा, तो उस के फलस्वरूप पैदा होने वाला प्रबल धमाका दो करोड़ मेगाटन शक्ति का होगा जो हिरोशिमा पर गिराए गये बम जैसे १६ लाख बमों की संख्या में गिरने की सूरत में होने वाले धमाकों के बराबर होगा। इस पुच्छल तारे पर बराबर नज़र जमाए रहने की आवश्यकता है क्योंकि भविष्य में इसकी रफ़्तार बढ़ सकती है। वैधशाला के निदेशक मिस्टर डंकन स्टील ने कहा कि ऐसा कोई छोटा ग्रह जो केवल एक से दो मीटर चौड़ा हो, पृथ्वी से टकरा जाए तो भूमण्डल पर ६५ से ७५ प्रतिशत तक मानव जीवन समाप्त हो जाएगा, जबकि यह पुच्छल तारा पांच किलो मीटर चौड़ा है। मिस्टर डंकन स्टील ने इस के अतिरिक्त यह भी कहा कि इस पुच्छल तारे से हम और हमारे बच्चे तो सुरक्षित रहेंगे परन्तु परपोतों और पर पोतियों की मृत्व और भूमण्डल का विनाश अनिवार्य है।

अब जो नवीनतम सूचनाएं प्रकाशित हो रही हैं, उनके अनुसार खगोल शास्त्र भौतिकी विशेषज्ञ जे०जे० रावल के अनुसार अमरीकी वैज्ञानिकों के पास यह प्रमाण मौजूद है कि इस पुच्छल तारे के दो विशाल झूमर जो सूर्य के चारों तरफ बृहस्पति ग्रह के कक्ष (पथ) में चलते हैं टूटने लगे हैं। इनमें कुछ १६ किलोमीटर चौड़े हैं और यह सूर्य के चारों तरफ़ अपने कक्ष से निकल कर तारा मण्डल के चारों तरफ स्वतंत्र रूप से परिक्रमा कर रहे हैं और अधिक सम्भावना है कि इनमें से कुछ सीधे भूमण्डल की ओर बढ़ रहे हों। पिछली दहाई से अन्तरिक्ष पिंडों और पुच्छल तारों से भूमण्डल को स्थायी खतरा बना हुआ है क्योंकि यह पुच्छल तारे पृथ्वी से एक खतरनाक नज़दीकी से गुज़र रहे हैं। अगर यह पृथ्वी पर गिरते हैं तो वह हमें हलाक कर देंगे।

आसमानी पुस्तकों में हजारों बरस से क़ियामत का वर्णय चला आ रहा है। जैसे कुर्आन हकीम की यह आयत कि –

"लोग पूछते हैं क़ियामत कब आएगी, कह दो कि उस की जानकारी तो केवल अल्लाह को है, वही अपने समय पर उसको ज़ाहिर करेगा वह ज़मीन और आसमान पर भारी बात है। वह अचानक तुम पर आ जाएगी।" (अअ़राफ : १८७)

उपरोक्त खगोल शास्त्रियों के बयान की रोशनी में अगर कुर्आन की इस आयत को देखा जाए तो यह सत्य स्पष्ट हो जाता है कि क़ियामत (महा प्रलय) किसी अस्पष्ट चीज़ का नाम नहीं है बल्कि वह एक वास्तविक घटित होने वाली घटना का दूसरा नाम है कि जब सितारे झड़ पड़ेंगे और चांद प्रकाशहीन हो जाएगा।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

रमज़ान में तरावीह़ की २० रकअ़तें जमाअ़त से पढ़ना ऐसी सुन्नते मुअक्किदा है कि जिस मुस्लिम बस्ती में न पढ़ी जाए तो सब सुन्नत छोड़ने के गुनहगार होंगे।

परामर्श प्रस्तुत है

सगीरा बानो शीरीं

सूजन का उपचार

● मोबीना बानो इलाहाबाद से लिखती हैं – "हाईस्कूल की छात्रा हूं। मेरे हाथ पांव के तलवे गर्मी का मौसम शुरू होते ही अति अधिक जलने लगते हैं। कभी मुंह में सूजन हो जाती है। पेशाब की जांच कराई, गुर्दे ठीक हैं। मेरे लिए कोई होमियोपैथिक दवा बताइये।

● बीबी कम से कम आप दस गिलास पानी प्रतिदिन पिया कीजिए। गर्म, खट्टी चीजों का सेवन न कीएिए। किसी होमियोपैथिक स्टोर से मर्क साल २०० की एक पुड़िया बनवा कर नहार मुंह खा लीजिए और दो दिन के बाद नेटरमसल्फ–३० शुरू कीजिए। यह दवा आप को गोलियों में मिल जाएगी। सुबह शाम तीन तीन गोलियां खा लीजिए। एक महीना खा कर मुझे पत्र लिखिये। पानी अवश्य पीजिए, सब्ज़ी, तरकारियां खूब खाइये। बड़ा गोश्त और खट्टी चीजों का प्रयोग न कीजिए।

● शमीम साहिबा ! इतनी कम उम्र में आपके दांत जलते हैं इसके उपचार के लिए कीकर की छाल का मनजन बनाइए या कीकर की नर्म दातौन प्रयोग कीजिए। सुबह शाम दूध पिया कीजिए। दांतों से खून आ रहा हो तो आप विटामिन सी ५०० मिलीग्राम की एक गोली रोजाना खाइये। बड़े का गोश्त आपके लिए हानिकारक है लीमू की सिकंजबीन आप के लिए लाभदायक है।

कीकर न मिले तो आप नीम की थोड़ी सी पत्ती पानी में उबाल कर रात को हलके गर्मी पानी से ग़रारे कीजिए कुछ कड़वा है मगर स्वाद में बहुत मीठा है। नीम की नर्म दातौन भी कर सकती हैं। किसी होमियोपथिक स्टोर से कलकेरियेफलोर १ एम की छः पुड़ियां बनवा लीजिए। पन्द्रह दिन के अन्तराल से नहारमुंह एक पुड़िया खानी है।

● मुबारक पुर से एक परेशान मां लिखती है कि उनकी बच्ची सूखा आटा, मिट्टी खाती है। उनसे कहना है कि आप अपनी बच्ची को सूखा आटा मिट्टी खाने न दीजिए। आपकी बच्ची पन्द्रह साल की है वह यह बात समझ लेगी।

कलकेरिया कार्ब ३० और कलकेरियाफास ६X का प्रयोग लाभदायक है। कलकेरिया की तीन तीन गोलियां सुबह शाम और दोपहर को खिलाइये और कलकेरिया कार्ब ३० के दो या तीन बूंद आधी प्याली पानी में मिला कर प्रतिदिन एक बार पिलाइये। दही, हरी सब्जी और फल आहार में शामिल कीजिए।

● नसरीन मंजूर औलाद की इच्छुक हैं। डाक्टरी रिपोर्ट के अनुसार हार्मोंस की समस्या है। इसके टीके बहुत महंगे आते हैं। उनसे कहना है कि आप एटर्सफेरीनोसा Q और अशोका Q जर्मनी का टिंचर खरीद लें। पन्द्रह बूंद एटर्स फेरीनोसा आधी प्याली पानी में नाशते के आधे घंटे बाद पी लीजिए और शाम को अशोका की पन्द्रह बूंद पानी में मिला कर पी लीजिए। सुबह एक प्याली गर्म पानी में एक चमम्च शहद मिलाकर पीजिए।

● साइमा बीबी लिखती हैं मेंहदी किस प्रकार अधिक रंग ला सकती है?

अच्छी मेंहदी वही होती है जिसमें लासून अधिक हो। रंग अधिक लाने के लिए इसमें स्ट्रिक एसिड शामिल कर दिया जाता है। दवा के रूप में प्रयोग करना हो तो आप मेंहदी की पत्ती लेकर खुद पीसिए।

मेंहदी से बाल रंगने के लिए समय की आवश्यकता है।

मेंहदी का रंग एक दम नीं चढ़ता क्यों कि इसके लिए ताप की आवश्यकता होती है। बालों पर लगाने के लिए आप अच्छी हरी ताजा मेंहदी चुनिये। उसमें थोड़ा सा फलों का सिरका या एक नीबू का रस मिलाइये और कुछ देर के लिए उसे रख दीजिए आप गहरा रंग देना चाहती हैं तो एक चम्मच काली काफी या चाय पका कर उसके पानी में मेंहदी घोलिये फिर बालों में लगाइये रंग अच्छा आएगा।

चुकन्दर का रस या चुकन्दर के टुकड़े पानी में पका कर मेंहदी में मिलाइये। सुर्ख शोख रंग आएगा। जिनके बाल रुखे हों वह मेंहदी में एक अण्डा, एक चमच सरसों का तेल और आधे नीबू का रस मिला कर लगाएं। इससे बाल चमकदार हो जाते हैं। मेंहदी लगा कर सिर पर प्लास्टिक का लिफाफा बान्धिये या प्लास्टिक की टोपी पहन कर तौलिया या दुपट्टा लपेट लीजिए। इस प्रकार मेंहदी का रंग जल्द चढ़ जाएगा।

एक हो जाएं तो बन सकते हैं खुर्शीदे मुबीं वरना इन बिखरे हुए तारों से क्या बात बने

हैदर अली नदवी

आज पूरी दुनिया में पूरब से लेकर पश्चिम तक उत्तर से लेकर दक्षिण तक जब हम धरती पर बसने वाली कौमों पर नजर डालते हैं तो हमें सबसे ज्यादा, पीड़ित अत्याचार का शिकार, असुरक्षित, बे वक़्अत, लावारिस बे यार व मददगार उम्मते मुस्लिमा नजर आती है वह कौम जो कभी शान–व–शौकत इज्जत–व–हशमत की तन्हा मालिक थी आज मैदान का फुटबाल बनी है वह कौम जो तने तन्हा कैंसर–व–किसरा जैसी सुपर पावर ताकतों को जेर–व–जबर कर चुकी है आज ५६ देशों की मालिक होते हुए भी गुलामी की फौलादी जंजीरों में जकड़ी है। जिसने मानवता का पाठ पढ़ाया जिसने संसार को संस्कृति एवं कल्चर दिया इल्मो–अदब के खजाने लुटाए आज उसे असभ्यता, आतंकवाद बुनियाद परस्ती की सौगात से नवाजा जा रहा है।

ये पूरी कौम के लिए आत्म विश्लेषण का विषय है क्योंकि हम से हमारी शौकत छिन गयी क्यों पूरी मिल्लत तबाही के बारूदी ढेर पर खड़ी है ? क्यों आज उसे बमों, तोपों, मीजाइलों, ग्रेनेडों, का निशाना बनाया जा रहा है क्यों आज साम्राज्यवादी देशों में बनने वाले हर असलह का प्रयोग मुस्लिम देशों पर किया जा रहा है क्यों उनकी दौलत व सरवत पर तिजारत की मण्डियां स्थापित की जा रही है। क्योंकि लोकतंत्र के नाम पर उनके इल्मो अदब, दीन–व अक़ाइद के नुकूश मिटाए जा रहे हैं।

दोस्तो इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इस कौम की एकता खण्डित हो चुकी है अरब से लेकर अजम तक पूरब से लेकर पश्चिम तक हम बंट गये वह कौम जिसके सालारे आज़म (स०) ने एक खुदा एक रसूल एक किताब एक किब्ले की लड़ी में पिरोया था वह आज मुल्कों, कौमों, खान्दानों, कबीलों और खुद साख़्ता मस्लकों के अन्कबूती धागों में बंट गयी आज मिल्लत हशरातुल अर्ज (जमीन के कीड़े मकोड़े) इसलिए बनी है कि "मिल्लत वअ़तसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअ़ा" का फरमान भूल गयीं, फरमाने इलाही है तुम एक अल्लाह की रस्सी मजबूत पकड़ लो और आपस में फ़िरके बन्दी मत करो वरना तुम्हारे पैर उखड़ जाएंगे लेकिन अफ़सोस आज मिल्लते इस्लामिया उसी दलदल में फंस गयी जिससे बचने को कहा गया था आज मिल्लत फ़िरक़ा परस्ती नस्ल परस्ती मस्लक परस्ती के खेमों में तकसीम है कहीं सुन्नियत और शीअ़त का ख़ल्फ़शार है तो कहीं मुक़ल्लिद और गैर मुक़ल्लिद का तनाजा है कहीं देवबन्दियत व बरेलियत का झगड़ा है तो कहीं शरीअ़त–व–तरीक़त दस्त गिरेबां हैं जिससे हमारी इमारत में शिगाफ़ पड़ा हुआ है। सहाबा (रज़ि०) के हालात पर जब हम नजर डालते हैं तो मालूम होता है कि वह शीशा पिलाई दीवार थे उनके आपसी मामलात या शरई नजरियात कुछ भी हों, मसाइल की तहक़ीक़ का इख़्तिलाफ़ अपनी जगह लेकिन उनमें जो चीज़ कदरे मुश्तरक थी वह यह थी कि वह एक उम्मत हैं उनमें उम्मत पना था इसी लिए वक्त की बड़ी से बड़ी तागूती और फिरऔनी ताकतें उनसे टकरा कर पाश पाश हो गयी थीं।

खलीफए राबे सैयदना अली मुर्तजा (रजि०) और कातिबे वहय अमीरे मुआ़विया (रजि०) के मध्य शदीद इख्तिलाफ था हत्ता कि दो लड़ाइयां भी हुई (उनका इख्तिलाफ जैसा भी था वह हमारा मौजूअ़ नहीं है) हमें यह दिखाना है कि उन हजरात में एकता, उम्मत पना कितना था जब एक ईसाई बादशाह को इन हजरात के इख्तिलाफ का पता चला तो सुनहरा अवसर समझ कर कि मिल्लते इस्लामिया तो दो खेमों में बंट गयी सेण्ट्रल पावर कमजोर है मदीना तैयबा पर हमले का इरादा किया जब अमीरे मुआ़विया रजि० को इसका पता चला तो ईसाई को लिख भेजा (मिल्लते इस्लामिया के इत्तिहाद का सपना देखने वाले कौम के हमदर्द अमीरे मुआ़विया का वह तारीखी जुमला सुनें) "ऐ ईसाई कुत्ते मुझे पता चला है कि तूने मेरे और अली (रज़ि०) के इख्तिलाफ़ को उम्मत का इख्तिलाफ़ समझकर मदीने पर चढ़ाई का नापाक इरादा किया है ओ ईसाई कुत्ते सुन तूने अगर मदीने पर फौज कशी का नापाक इरादा किया तो हज़रत अ़ली (रज़ि०) के

लश्कर की तरफ से जो सिपाही सबसे पहले तेरा सर कलम करने निकलेगा वह मुआविया बिन सुफ़्यान होगा। चुनांचे इस खत के पहुंचने के बाद उस ईसाई की हिम्मत न हुई कि मदीने पर हमला करे। मुसलमानो! इसे कहते हैं उम्मत ये है मिल्लत की हमदर्दी, इस्लाम की पासबानी ये होती है हकीकी गमख्वारी ये है और यही है अशिद्दाउ अलल कुफ्फारि रूहमाउ बैनहुम की हकीकी ताबीर–आज मिल्लते इस्लामिया के सभी धड़े और अमीरे मुआविया के इस जुमले से नसीहत ले लें तो दुन्या में उन्हें आंख दिखाने वाला नहीं उम्मत की खोई हुई अज़्मत मिल जाए लुटा हुआ वक़ार हासिल हो जाए।

रहा इख़्तिलाफ़े राय तो यह तो हमेशा से है और हमेशा रहेगा इसे कोई खत्म नहीं कर सकता यह फितरी चीज हे ये इख़्तिलाफ़ु उम्मती रहमतुन के दाएरे में आता है अगर ये इख़्तिलाफ़ नहीं होगा तो उम्मत मुन्जमिद होकर रह जाएगी तहक़ीक व रिसर्च के शोबे बन्द हो जाएंगे तरक्की रुक जाएगी घर के १० लोगों की रायें कभी एक नहीं हो सकतीं लेकिन जब घर की इज़्ज़त और वजूद पर ही ख़तरा आन पड़े तो वहां पर रायों के बालाए ताक रखकर अमीरे मुआविया का रोल अदा करना पड़ेगा– सहाबा (रज़ि०) में इख़्तिलाफ़ था पर मुनाफ़िक़त और ग़द्दारी नहीं थी शख्सी इख्तिलाफ़ होते थे लेकिन जब इस्लाम पर ही हमला होने लगे मिल्लत को निशाना बनाया जाने लगे तो ये बात सहाबा को गवारा नहीं थी यही उनकी ताक़त का राज़ था।

उम्मते मुस्लिमा की बर्बादी पर आंसू बहाने वाले मिल्ली हमदर्द सोचें अगर नार्दन एलाइन्स अमरीका का आलए–कार न बनता तो उस जारेह की मजाल न थी कि अफगानिस्तान की सर ज़मीन पर बमों की बरसात करता अगर नाम निहाद मुस्लिम देश अमीरे मुआविया का रोल अदा करते तो आज इराक़ तबाह न होता अगर मुस्लिम मुल्क एक होते तो आज कोई ताकत ईरान और शाम को आंखें न दिखाती अगर उम्मत "वअ़तसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअ़ा" का मिस्दाक होती तो वियतनाम, स्पैन सोमालिया चैचैन्या और कोसोओ के मुसलमानों को हशरातुल अर्ज बना कर उन का जनाजा न निकला जाता–अल्लामा इकबाल ने इसी पर तो आंसू बहाए थे,

हरमे पाक एक, खुदा एक, कुरआं भी एक
क्या बात थी जो होते मुसलमां भी एक

आज अगर उम्मत के सभी तबकों के अन्दर उम्मत पना नहीं आया उम्मत अपने तमामतर फिक़ही इख़्तिलाफ़ात के बावजूद एक प्लेटफ़ार्म और इस्लाम के बैनर तले नहीं आयी और इसकी कोई अमली शक्ल वजूद में नहीं आयी तो हमारा हाल हशरातुल अर्ज (धरती की कीड़े मकोड़ों) और खिलाड़ियों के फुटबाल की तरह होता रहेगा और उम्मत के सभी तबके बे वक़अत बुज़्दिल और गुलामी के खूगर बन कर रह जाएंगे और साम्राजी ताकतें डिवाइड एण्ड रूल की पालीसी अपना कर उन पर हुकूमत करती रहेंगी और हम आपस में ही दस्त गिरेबां होकर अपनी तबाही का तमाशा देखते रहेंगे।

●●●

0522-264646

Bombay Jewellers

The Complete Gold & Silver Shop

84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

MOHD. ASLAM

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

रोज़े का उद्देश्य और मानव जीवन पर उस का प्रभाव

मौ० सै० अबुल ह़सन अ़ली नदवी

नुबूवत ने मानव इतिहास के विभिन्न कालों और पृथ्वी के विभिन्न भागों में मानवता का विकास किया जो दुन्या परस्ती और विलास्ता के ज़द में आकर नष्ट होने के क़रीब हो चुकी थी, उसने आचरण व रूहानियत, पवित्र मनोवृत्त और इच्छाओं के मारे और भौतिकता के कुचले और कमज़ोर दिल को निर्दयता और वास्नाओं से पाक व साफ किया और उसको जीवन के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नये सिरे से तैयार किया, जिस को इबादत (उपासना) कहा जाता है, इसको मानवता के कमाल से सुसज्जित किया जिसको विलायत (अल्लाह का समीपवर्ती) कहा गया है और उस पद और उस मिशन को पूरा करने के योग्य बनाया जिस के लिए उसको दुन्या में उतारा गया है और जिसको ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) माना गया है।

यह वह काम है जो न तो फ़िरिश्तों वाली रूहानियत (अध्यात्म) से पूरा हो सकता था न जानवरों जैसे आचरण से। इसके लिए हर साल ऐसे रोज़े का प्रबन्ध किया गया जो पेट पूजा वाली भौतिकता को किसी सीमा तक कम कर सके। जीवन की खोई हुई प्रसन्नता ताज़गी और शक्ति को दोबारा वापस ला सके और उसके अन्दर ईमान और रूहानियत (अध्यात्म) की इतनी मिक़दार दाख़िल कर सके जिसके द्वारा जीवन का संतुलन क़ाइम रखना सम्भव हो।

और ग़लत इच्छाओं का दमन हो इन्सान कुछ समय के लिए ईश्वरी गुण का किसी क़द्र प्रतिबिम्ब उतार सके और उसमें से कुछ भाग पाकर सम्मान पा सके फ़िरिश्तों और फ़िरिश्तों जैसे गुणों से उसका सम्बन्ध स्थापित हो जो तरह–तरह के खानों या हर समय खाते रहने और अन्तिम हद तक पेट भर लेने के स्वाद से बहुत उच्च, पवित्र, वास्तविक और हमेशा रहने वाली है।

रोज़े का उद्देश्य और जीवन पर उसका प्रभाव

इमाम ग़ज़ाली रह० ने अपनी प्रमुख शैली में इस वास्तविकता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है :–

"रोज़ा का उद्देश्य यह है कि आदमी अल्लाह के गुणों में से किसी एक गुण का अक्स अपने अन्दर पैदा करे जिस को "समादियत" (निर्लोभ) कहते हैं। वह जहां तक सम्भव हो फ़िरिश्तों के मार्ग पर चलते हुए वासनाओं से छुटकारा पाले इसलिए कि फ़िरिश्ते भी इच्छाओं से मुक्त हैं और इन्सान का रिश्ता भी जानवरों से बुलन्द है तथा वासनाओं के मुक़ाबले के लिए उसको बुद्धि और पहचान की रोशनी दी गई है। अलबत्ता वह फ़िरिश्तों से इस लिहाज़ से कमतर है कि वासनाएं बहुदा उस पर क़ाबू पा लेती हैं और उसको उनसे आज़ाद होने के लिए सख़्त परिश्रम करना पड़ता है। चुनान्चः जब वह अपनी वासनाओं की धारा में बहने लगता है तो घटिया से घटिया दर्जे तक पहुंच जाता है और जानवरों के रेवड़ से जा मिलता है और जब अपनी वासनाओं पर क़ाबू पा लेता है तो फिरिश्तों की उच्च श्रेणी तक पहुंच जाता है।

अल्लामा इसी बात को अधिक स्पष्ट करते हुए लिखते हैं :

"रोज़े का उद्देश्य यह है कि इन्सानों का मन वासनाओं और आदतों के शिकंजे से आज़ाद हो सके उसकी कामवासना शक्ति में संतुलन पैदा हो और उसके द्वारा वह अच्छे आचरण के मोती प्राप्त कर सके और अमर जीवन की प्राप्ति के लिए अपने मनोवृत्ति को पवित्र कर सके। भूख और प्यास से उसकी वासना शक्ति में कमी पैदा हो और यह बात याद आए कि कितने मिस्कीन हैं– जो रात की रोटी के मुहताज हैं। वह शैतान के रास्तों को उस पर तंग कर दे और शरीर के तमाम अंगों को उन चीज़ों की ओर झुकाव से रोक दे जिनमें उसके लोक प्रलोक की हानि है। इस प्रकार यह परहेज़गारों की लगाम मुजाहिदीन की ढाल, और नेक व समीपवर्ती लोगों के लिए अच्छा रास्ता है।

अल्लामा रोज़ा के अर्थ और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए आगे लिखते हैं :–

बुरी पदार्थ के इकट्ठा हो जाने से इन्सान में जो ख़राबियां पैदा हो जाती हैं उन से वह उसकी रक्षा करता है, जी चीज़ें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं उनको वह बाहर निकाल देती है और हाथ पैर में जो ख़राबियां बुरी इच्छाओं और वासनाओं के नतीजे में प्रकट होती रहती है वह उससे दूर होती है वह स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद और पवित्र जीवन बिताने में अत्याधिक सहायक है।

अल्लाह तआ़ला फर्माता है।

अनुवाद : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये हैं जैसा कि उन लोगों पर फर्ज़ किये गये थे जो तुम से पहले हुए हैं अजब नहीं कि तुम मुत्तक़ी (संयमी) बनजाओ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः—

"रोज़ा ढाल है"।

चुनान्चे ऐसे व्यक्ति को जो शादी करने का इच्छुक हो और बीवी का खर्च उठाने के योग्य न हो रोज़ा रखने का निर्देश दिया गया है और इसको उसका अचूक औषधि बताया गया है। उद्देश्य यह है कि रोज़ा के लाभ और मसलहत चूंकि प्रकृति और बुद्धिमानी की दृष्ट से सही थे इस लिए इसको अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की ख़ातिर केवल अपनी दया और वरदान के रूप में फ़र्ज़ किया है।

इसी क्रम में आगे लिखते हैं :—

चूंकि हृदय का सुचार और उस पर क़ायम रहना, अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखते हुए उसकी ओर पूरी तरह मुतवज्जह रहने पर निर्भर है।

इसलिए दिल की परेशानी इस के हक़ में अधिक हानिकारक है, खाने पीने की अधिक मात्रा , लोगों से ज़ियादा मेल जोल, आवश्यकता से अधिक बातचीत वह चीज़े हैं जिनसे हृदय की शान्ति में फ़र्क़ आता है और इंसान अल्लाह तआ़ला से कट कर विभिन्न मार्गों पर भटकने लगता है। कभी कभी केवल इन्हीं कारणों से उसकी राह खोटी होती है। इन सब बातों के कारण अल्लाह तआ़ला की कृपा दृष्ट का तक़ाज़ा था कि अपने बन्दों पर रोज़ा फ़र्ज़ (अनिवार्य) करे और उसके द्वारा भोजन की अधिक मात्रा और इच्छाओं के सिद्धान्तों की गंदगी की सफ़ाई हो सके सिजके कारण आदमी अल्लाह के सिद्धान्तों से वंचित रहता है। वह उससे लोक परलोक दोनों जगह लाभ उठा सके और उसकी स्थाई और अस्थाई किसी मसलिहत (उचित प्रयोजना— **Policy**) को हानि न पहुंचे।

रोज़ा प्राचीन धर्मो में

संसार के जिन प्राचीन धर्मों और इतिहास के जिन धार्मिक नियमों व परम्पराओं में हमको "रोज़ा" मिलता है उन प्राचीन्तर धर्म में भारत का हिन्दू धर्म भी आता है जिस से इस देश की बहुत बड़ी संख्या सम्बन्धित है। इस धर्म के एक प्रतिनिधि टी०एम०पी० महादेवन (**T.M.P. Mahadevan**) जो मद्रास विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग (**Dept. of Phylosophy**) के अध्यक्ष हैं हिन्दू धर्म में और हिन्दू समाज में रोज़े (ब्रत) की सत्यता पर प्रकाश डालते हूए लिखते हैं:—

"उन त्योहारों में जिनको हर वर्ष मनाया जाता है, कुछ त्योहार रोज़ा (ब्रत) के लिए प्रमुख हैं जो आत्मा को शुद्ध करने के लिए रखा जाता है। हर हिन्दू समुदाय ने प्रार्थना तथा उपासना के लिए कुछ दिन निश्चित किये हैं जिन में उसके बहुत से लोग ब्रत रखते हैं, खाने पीने से दूर रहतेहैं, रात—रात भर जाग कर अपनी धार्मिक पुस्तको को पढ़ते और ज्ञान ध्यान में लगे रहते हैं उनमें सबसे प्रसिद्ध त्योहार जो विभिन्न समुदायों में प्रचलित है वैकान्त एकादशी का त्योहार है जो विशनू (विष्णु) से सम्बन्धित है लेकिन इसमें केवल विशनू के मानने वाले ही नहीं बल्कि दूसरे लोग भी ब्रत रखते हैं। इस त्योहार में वह दिन में रोज़ा (ब्रत) रखते हैं और रात को पूजा करते हैं।

कुछ दिन ऐसे हैं जो औरतों के लिए ही होते हैं वह उन देवियों से प्रार्थना करती हैं जो ईश्वर की उन स्त्री सम्बन्धी विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं जो विभिन्न रूपों में प्रकट होती हैं। इन दिवसों को उनकी महत्ता के कारण 'ब्रत' या प्ररण कहा जाता है। और यह दिन आत्मा की शुद्धता के लिए खास हैं और इनका उद्देश्य आत्मा को आंतरिक शुद्धता प्रदान करना है।

मौलाना सैयद सुलेमान नदवी रह० ने "सीरतुननबी" भाग पांच में इन्साइक्लोपीडिया ब्रेटेनिका के संदर्भ से लिखा है कि :— "प्राचीन मिस्रियों के यहां भी रोज़ा दूसरे धार्मिक त्योहारों में शामिल नज़र आता है। यूनान में केवल औरतें "थमसूफ़ेरिया" की तीसरी तारीख को रोज़ा रखती थीं। पारसी धर्म में आम मानने वालों पर रोज़ा फ़र्ज़ नहीं लेकिन इन की अवतरित पुस्तक की एक आयत (इशलोक) से प्रमाणित होता है कि रोज़ा का आदेश उनके यहां मौजूद था। मुख्य कर धार्मिक गुरूओं के लिए पंचवर्षीय रोज़ा अनिवार्य था।"

रोज़ा यहूदियों में :

जहां तक यहूदियों का सम्बन्ध है बाबुल युग में रोज़ा उनके लिए मातम और सोग का चिन्ह बन गया था। यदि कोई ख़तरा होता या कोई काहिन किसी ईश्वरी सन्देश और नुबूवत के लिए तैयारी प्रारम्भ करता तो उस समय रोज़ा ज़रूर रखा जाता, यहूदी इस समय भी अस्थाई तौर पर रोज़ा रखते हैं जब वह समझते हैं कि खुदा उनसे नाराज़ है, देश में कोई महामारी आती, मुसीबत आती, सूखा पड़ता या राजा किसी बड़ी युद्ध के लिए रवाना होता तब भी रोज़ा रखा जाता ।

यहूदियों के रोज़े के दिन सीमित और प्राचीन हैं यह उस कफ़्फ़ारा (पश्चाताप) के रोज़े के अतिरिक्त हैं जो यहूदी धर्म में एक अकेला रोज़ा है इसके अतिरिक्त उनके यहां "लगातार रोज़े" के भी मौसम हैं, जिन का सम्बन्ध आप्दा और दुर्घटनाओं से है। जैसे बाबुल काल में 'जमात असीरी' यह चौथे महीना (मई) और पांचवें महीना (जून) और छटे महीना तुशरी (जुलाई) और सातवें भहीना तिबित (**Tebet**) में पड़ते हैं। "तलमूद के कुछ विद्वानों का विचार है कि इन दिनों के रोज़े गुलामी काल में अनिवार्य और आज़ादी व सम्पन्नता के ज़माने में वैकल्पिक हैं।

इन रोज़ों के अतिरिक्त कुछ रोज़े और भी हैं जो उन विभिन्न दुखदाई घटनाओं की याद में रखे जाते हैं जो यहूदियों के साथ पेश आए। यह रोज़े भी दूसरे के साथ सम्मिलित कर लिए गये हैं। यह अनिवार्य और आवश्यक नहीं हैं। इनका जनसाधारण में अधिक प्रचलन भी नहीं है। थोड़ी असहमत के साथ इनकी संख्या पचीस है। इनके अतिरिक्त कुछ रोज़े और हैं जो स्थानीय ओर क्षेत्रीय कहे जा सकते हैं। उनका सम्बन्ध भी यहूदियों की, दुखदाई ऐतिहासिक घटनाओं से है। बहुत से रोज़े विभिन्न वर्गों में बंटे हुए हैं। हर वर्ग एक ख़ास और दुखदाई ऐतिहासिक घटनाओं की याद में यह रोज़ा रखता है या ग़मी, खुशी के उत्सव की यादगार के रूप में इसको मनाता है। साल के पहले दिन का रोज़ा यहूदियों के बहुत से सम्प्रदाय में प्रचलित हैं। बहुत से रोज़े यहूदी धर्मगुरूओं के अधिकार में है जो सूखा पड़ने, किसी ख़तरे और मुसीबत या सरकार के अत्याचारी क़ानूनों, विभिन्न आप्दाओं और बलाओं से सुरक्षा के लिए अपनी समझ के अनुसार समय समय पर यह रोज़े लोगों पर फर्ज़ करते रहते हैं।

कुछ व्यक्तिगत रोज़े भी हैं जिनको हर व्यक्ति अपनी दशा और आवश्यकता के अनुसार रख सकता है। यह रोज़े भी व्यक्ति सम्बन्धी घटनाओं की याद में गुनाहों के कफ्फ़ारों (बदले) के लिए, या किसी मुसीबत और आफ़त के समय खुदा की दया दृष्ट की प्राप्ति के लिए रखे जाते हैं। लेकिन यहूदियों के धर्मगुरूओं के निकट यह रोज़े उस व्यक्ति के लिए हैं जो स्वयं विद्वान या धर्मगुरू न हो ताकि उसके आत्मसम्मान में कोई बाधा न उत्पन्न हो और उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न पड़े। डरावना सपना भी देख कर रोज़ा रखा जाता है। ईद के अवसर पर यहूदी नियम में रोज़ा रखना मना है लेकिन "तलमूद" ने इन दिनों में रोज़ा रखने की अनुमति इस प्रतिबन्ध के साथ दी है कि आम दिनों में भी इस का कफ़्फ़ारा (बदला) रोज़ा ही द्वारा अदा किया जाये।

रोज़ा यहूदियों में इशराक (प्रातः) के समय से प्रारम्भ होता है और रात के पहले तारे के निकलने तक जारी रहता है सिवाय उस रोज़े के जो कफ़्फ़ारा (बदले) के लिए है और मई के नवें दिन रखा जाता है। यह रोज़ा शाम से शाम तक चलता है। साधारण रोज़ों के लिए कोई विशेष निर्देश या नियम नहीं है। रोज़े में दान देने और निर्धनों को भोजन कराने को भी उत्साहित किया गया है मुख्य कर उस खाने को निर्धनों में बांटने पर जोर दिया गया है जो साधारणतः तैयार किया जाता है।

अब महीनों के पहले नौ दिन और तमूज़ की सत्तरहवीं तारीख और आब की दसवीं तारीख के बीच के दिन कुछ रोज़े के लिए निश्चित है अर्थात इस में केवल मास खाना और शराब पीना मना है।

ईसाइयों में रोज़े के निर्देश :

ईसाइयों में रोज़े की अस्लियत क्या है इस की व्याख्या और विस्तारपूर्वक वर्णन कठिन है इसका कारण यह है कि मसीही धार्मिक नियम और निर्देशों के लिहाज़ से दूसरे धर्मों से पीछे हैं। इसके आदेश व नियम समय के साथ और राजनैतिक कार्यों के प्रभाव से अक्सर बदलते रहे हैं। इसलिए इस को अल्लाह की शरीअत (ईश्वरी क़ानून) कहना बहुत कठिन है तब भी इस का संक्षिप्त वर्णन यहां पेश किया जा रहा है। इस से उन परिवर्तनों का भी अन्दाज़ा होगा जो समय–समय पर इसमें बराबर होते रहे।

"हज़रत मसीह ने अपनी नुबूव्वत के प्रारम्भ से ४० दिन पहले रोज़ा रखा

था। वह कफ़्फ़ारे (बदले) का रोज़ा था जो मूसवी शरीअ़त (नियम) में फ़र्ज़ के दर्जे में है। वह इसको उसी तरह नियमित रूप से रखते थे जो कोई सच्चा यहूदी रख सकता है। उन्होंने रोज़े के कुछ आदेश अपने पीछे नहीं छोड़े, उन्होंने केवल उसके नियम व सिद्धान्त बयान किये और उसकी व्याख्या कलीसा पर छोड़ दी। चुनान्चे ईसाइयत में कोई व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि रोज़े के निर्देश व नियम स्वयं उसके निकाले हुए हैं। मसीही मूल पुस्तकों में पाल के रोज़े का वर्णन मिलता है। उसमें यह भी लिखा है कि पहले ज़माने के वह ईसाई जो यहूदी की नस्ल से थे कफ़्फ़ारा (बदले) रोज़ा बराबर रखते थे। राहिब (**Luke**) ने इस का ज़िक्र खास महत्व के साथ किया है लेकिन वह ईसाई जो दूसरे सिद्धान्तों से सम्बद्ध है इस पर ज़ोर नहीं देते ।

पाल के देहांत के डेढ़ सौ साल बाद लोगों में रोज़ा के क़ानून के नियमबद्ध करने की तीव्र इच्छा पैदा हुई। बहुत से राहिब (पोप) और चर्च के ज़िम्मेदार काम वासनाओं के मुक़ाबले के लिए रोज़े का निर्देश देते थे उस ज़माने में इस का बहुत ध्यान रखा जाता था कि रोज़ा कोई ऐसी बाह चीज़ न बन जाये जो रोज़ा रखने वाले पर कोई प्रभाव न डाल सके।

"एरनीस" का रोज़े के प्रकार के बारे में यह बयान है कि रोज़ा एक दिन का भी होता था और दो दिन का भी और यह लगातार चालीस घंटे का भी यह स्थिति वर्षों तक रही। "दुखों और सलीब के शुक्रवार" का रोज़ा एक जन साधारण का सर्वमान्य रोज़ा था जिसका दूसरी शताब्दी में कुछ देशो में चलन था। इसी तरह जो लोग बपतिस्मा के इच्छुक होते थे वह भी एक दिन या दो दिन का रोज़ा रखते थे और इसमें बपतिस्मा करने और कराने वाले दोनों शरीक होते थे।

ईसाइयों के विभिन्न समुदायों में रोज़ा रखने के तरीक़ों में आंशिक असहमतियां भी पाई जाती हैं। रोज़ा के नियमबद्ध और कानून बनाने का काम सबसे अधिक दूसरी और पांचवीं ईसा शताब्दी के बीच सम्पन्न हुआ। उस समय चर्च में कुछ आदेशों और निर्देशों के बारे में एक बयान प्रक़ाशित किया। चौथी शताब्दी में रोज़ा में सख़्ती और कट्टरता का अंश बहुत बढ़ गया और इस से सहनशीलता नर्मी और लचक की विशेषता जाती रही। ईस्टर से पहले दो दिन रोज़े के लिए निर्धारित कर दिये गये थे। इन दिनों का रोज़ा आधी रात को समाप्त होता था। बीमारों को जो इन दिनों में रोज़ा रखने से असमर्थ थे सनीचर को रोज़ा रखने की अनुमति थी। तीसरी ईसा शताब्दी में रोज़े के दिन निश्चित कर दिये गये। रोज़े की समाप्ति पर भी बहुत असहमति थी। कुछ लोग मुर्ग की बांग पर रोज़ा खोलते थे और कुछ लोग अंधेरा अच्छी तरह फैल जाने पर। चालीस दिन के रोज़े का पता चौथी ईसा शताब्दी तक हम को नहीं मिलता। विभिन्न देशों की जलवायु, वातावरण और जीवन शैली भी रोज़े को प्रभावित करती थी। चुनान्चे रूमियों का रोज़ा "स्कन्दरया" और "लानान" के रोज़े से भिन्न होता था। कुछ लोग जानवरों के गोश्त से परहेज़ करते थे कुछ उसको उचित समझते थे। कुछ केवल मछली और चिड़ियों के मांस पर निर्भर रहते थे। कुछ लोग अंडे और फलों से परहेज़ करते थे। कुछ केवल सूखी रोटी खाते और कुछ इन सब चीजों को अनुचित समझते थे। बाद में हज़रत मसीह के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और मसीही इतिहास की रोशनी में विभिन्न रोज़े प्रस्तावित हुए जो समय के साथ अपनी शक्ल बदलते रहे। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों के अनुसार रोज़े की अधिकतर एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

सुधार काल के पश्चात इंग्लैंड के चर्च ने रोज़े के दिन निश्चित किये लेकिन रोज़े के नियम व आदेश और सीमाएं रोज़ा रखने वाले के मत और ज़िम्मेदारी की भावना पर छोड़ दिये गये। एडवर्ड सिक्स, जेम्स प्रथ और एलजाबेथ के काल में इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट ने रोज़े के दिनों में गोश्त खाना प्रतिबन्धित कर दिया और उस का कारण यह बताया कि मछलियों का शिकार और समुद्री व्यापार को बढ़ावा देना और उससे लाभ उठाना आवश्यक है।

यही कारण है कि जब अल्लाह तआ़ला ने रोज़े का आदेश दिया और मुसलमानों पर उसको फ़र्ज़ किया तो यह फ़रमाया –

अनुवाद : ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसा कि उन लोगों पर फर्ज़ किये गये थे जो तुम से पहले हुए हैं, अजब नहीं कि तुम मुत्तक़ी बन जाओ।

रोज़े के निर्धारण व संख्या में आज़ादी और अपनी राय की हानियां

कुछ प्राचीन धर्मों और धार्मिक नियमों में रोज़े के दिनों का निर्धारण या विस्तार नहीं मिलता इन धर्मों में इनके मानने वालों को स्वयं यह

अधिकार था कि वह जो दिन चाहें रोज़े के लिए निश्चित कर लें। उनको यह अधिकार था कि खाने, पीने को बिल्कुल छोड़ दें या भोजन की कम मात्रा का सेवन करें। उनको कुछ चीजों को छोड़ने का आदेश था, कुछ चीजों को इख़्तियार करने के निर्देश थे जैसा कि बाज आदमी मांस खाना अनुचित समझते थे और बाज़ उस खाने से बचते थे जो आग पर पकाया गया हो। कुछ लोग केवल नमकीन पानी या इसी तरह की दूसरी चीज़ों को काफ़ी समझते थे। इन तमाम चीज़ों ने रोज़े की रूह को बहुत हानि पहुंचाई और उसकी शक्ति और प्रभाव को बहुत कमज़ोर कर दिया। चूंकि सारा अधिकार रोज़ा रखने वाले को था और रोज़े का दिन, खाने की मात्रा और उनके प्रकार का निर्धारण सब उसी के सुपुर्द था, इसलिए उसमें स्वाभाविक तौर पर सुस्ती, लापरवाही और उपभोग की आदत पैदा हो गई। लोगों ने सीमा का उल्लंघन करना प्रारम्भ कर दिया। इस की निगरानी और पूछगछ बहुत कठिन हो गई। इसलिए यदि रोज़ा न रखने वाले से यह पूछा जाता कि तुम रोज़े के दिन खा कैसे रहे हो तो वह कह सकता था कि मेरा रोज़ा समाप्त हो चुका है। उसी तरह यदि किसी से कहा जाता कि रोज़ा खोलने के समय तुम रोज़ा कैसे हो तो वह यह उत्तर दे सकता था कि मेरा रोज़ा तो अब प्रारम्भ हुआ। यही वह चीज थी जिस की वजह से प्राचीन क़ौमें और धर्म रोज़ा की रूहानी और नैतिक लाभ से बिल्कुल वंचित हो गये बल्कि अधिक सही शब्दों में रोज़ा की अस्लियत उनके हाथ से निकल गई। रोज़े के दिन और समय का निर्धारण उसके आदेशों की व्याख्या में सबसे बड़ी हिकमत (नीति) वास्तव में यही है।

हज़रत शाहवली युल्लाह साहब अपनी पुस्तक "हुज्जतुलाहुलबालिग़ा" में लिखते हैं–

"रोज़ा में अधिकार दे देने से बचाव की दलील और भागने का द्वार खुल जाएगा एक भरपेट खाता है, दूसरा आधा पेट खाता है। चुनानचा इस प्रकार के निर्धारण से अगर एक का भला होगा तो दूसरे की हानि भी होगी। वह कहते हैं इस निर्धारण और समय की पाबन्दी में संतुलन आवश्यक है, वह लिखते हैं :–

"यह भी आवश्यक था कि यह अवधि सहनशक्ति से परे न हो जैसे तीन दिन तीन रातें इसलिए कि यह धार्मिक नियमों से अलग और उसके उद्देश्य के विरूद्ध है और साधारणतः इस पर अमल भी असम्भव है।

लगातार रोज़ा या तोड़ तोड़ कर ?

रोज़ा की शक्ल प्राचीन धर्मों में अधिकतर यह थी कि तोड़ तोड़ कर विभिन्न दिनों में रखते थे। वह साल के अलग अलग दिनों में बटा हुआ तथा उसके बीच इतना लम्बा अंतराल होता था कि उसका प्रभाव ही समाप्त हो जाता था और इसके पहले कि इंसान का झुकाव, विचार, जज़्बात पूरी तरह इसरंग में रंग पाए उसका सिलसिला टूट जाता था। हिकमत का तक़ाज़ा यह था कि यह दिन सिलसिले वार बीतें। हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब इस बारे में लिखते हैं :–

"यह आवश्यक है कि खाने पीने से परहेज़ का अवसर बार बार आए ताकि बन्दगी का अभ्यास हो नहीं तो एक बार भूखा रहना (चाहे वह जिस क़दर कठिन और तकलीफ़ देने वाली भूख हो) कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकता।

इन तमाम पहलुओं को सामने रख कर देखाजाए तो नज़र आएगा कि इस्लामी शरीअ़त (नीयम) इन तमाम शर्तों व विशेषताओं से परिपूर्ण है और इससे वह तमाम रूहानी, नैतिक आध्यात्मिक और सामूहिक लाभ और फल प्राप्त होते हैं जो रोज़े के उद्देश्य हैं और उसका बड़ा भाग उस रोज़े के रूप में है जो मुसलमानों पर फर्ज़ किया गया है।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

रोज़ों का फ़िदया

अगर कोई इतना बूढ़ा हो जाए कि वह रोज़ा नहीं रख सकता या उस को कोई ऐसी बीमारी है कि अब बचने की उम्मीद नहीं है वह अपनी तरफ से रोज़े का फिदया दे सकता है वह अपने घर वालों से कहे कि उसके रोज़ों का फिदया अदा करें। एक रोज़े के फ़िदये में पौने दो सेर गेहूं या उसकी कीमत मुहताज को दें। यानी सदक–ए–फित्र के बराबर दें। या एक मुहताज को दोनों वक्त पेट भर खाना खिलाएं। बीमार अच्छा हो जाए तो रोज़े कज़ा करने पड़ेंगे। रोज़ा छोड़ने वाले अल्लाह की पकड़ से डरें।

हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अ़लै० का क़िस्सा

आसिफ़ अंज़ार नदवी

कुर्आन ने केवल यह बातें बयान नहीं की हैं कि किस प्रकार से पहले की कौमों पर अ़ज़ाब आया था किस प्रकार से उन दुष्टों ने अपने नबियों से ठट्ठा किया किस प्रकार से उनको झुठलाया कैसे–कैसे उनका अपमान किया किस–किस तरह उनसे उपहास का बरताव किया। किस प्रकार से उन पाखण्डियों नेउनके विरुद्ध साज़िश रची उनको क़त्ल करने के कैसे–कैसे उपाय किये। फिर इन शरारतों के परिणाम के तौर पर किस प्रकार से ईश्वर ने उन तमाम अपराधियों को तबाह व बरबाद कर दिया। बल्कि इसके साथ–साथ अल्लाह ने अपनी ने अमतों के भी बहुत से क़िस्से सुनाए हैं। कुरआन अल्लाह के इनआमात की बातें बताता है।

अल्लाह ने कुरआन में इन नेअ़मतों के बारे में कभी तो खूब खोल कर और कभी संक्षिप्त अंदाज़ में बताया है अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान, हज़रत अय्यूब, हज़रत यूनुस, हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया अ़लै० को अपनी बहुत सी नेअ़मतें दी।

हज़रत दाऊद और सुलैमान को तो अल्लाह ने एक बड़े देश का राज पाट दिया तथा उनका देश बड़ा विशाल था उनको ईश्वर ने बहुत सी ऐसी बातों का ज्ञान दिया था जिस से अन्य लोग बिल्कुल कोरे थे। बड़े बड़े दुष्टों, प्रबलों, शक्तियों और विद्रोहियों को उनके सामने वशीभूत और वशवर्ती कर दिया था। यहां तक कि पशुओं पखेरूओं जड़पदार्थों को भी उनकी आज्ञा के अधीन कर दिया था। कुरआन मजीद में अल्लाह का इरशाद है– "और हमने दाऊद और सुलैमान को दीन और शरीअत और शासन चलाने का ज्ञान प्रदान किया था। और उन दोनों ने शुक्र अदा करने के लिए कहा तमाम तारीफ़ (सराहना)अल्लाह ही के लिए उचित और शोभनीय है जिसने हम को बहुत से ईमान वाले बन्दों पर श्रेष्ठता या प्रमुखता दी। और दाऊद अलै० की वफ़ात (मृत्यु) के बाद उनके प्रतिनिधि सुलैमान (अ़०) हुए और उन्होंने कृतज्ञता प्रकाशन के लिए कहा ऐ लोगो हम को पक्षियों पखेरूओं की बोली समझने का ज्ञान दिया गया है और हम को शासन से सम्बन्धित हर किस्म की जरूरी चीजें दी गयीं हैं। वास्तव में ये अल्लाह की खुली हुई कृपा दया है।

दाऊद पर अल्लाह की नेअमतें:

दाऊद अलै० पर तो अल्लाह की ऐसी कृपा थी कि वैसी किसी और पर न हुई। अल्लाह ने पक्षियों पखेरूओं को उनका आज्ञाकारी कर दिया था वे उनके साथ अल्लाह से प्रार्थना करते और उनकी पवित्रता बयान करते थे। अल्लाह ने उनके हाथ को बहुत ही मजबूत और सुन्दर कवच के निर्माण की कला दी थी। उनके हाथों में आकर लोहा तो जैसे मोम हो जाता था अल्लाह ने खुद ही कुरआन में कहा है "और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ी नेअ़मत दी थी ऐ पर्वतों दाऊद के साथ बार–बार तसबीह करो। और इसी तरह परिन्दों को भी हुक्म दिया। और हमने उनके लिए लोहे को मोम की तरह नर्म कर दिया और उनको ये हुक्म दिया कि तुम पूरी ज़िरह बनाओ और कड़ियों के जोड़ने में अन्दाजा रखो और तुम सब नेक काम किया करो मैं तुम्हारे सबके आमाल देख रहा हूं और दूसरी जगह अल्लाह का इरशाद है "अरे हमने दाऊद के साथ पर्वतों और परन्दिों को भी उनका अधीन कर दिया था कि वो भी उनके साथ तस्बीह किया करते थे वास्तव में इन कामों के करने वाले हम थे।

इन नेअमतों पर दाऊद अ़० का शुक्र:

हज़रत दाऊद एक महान देश के राजा और महान हस्त शिल्प होने के बावजूद अल्लाह से बहुत डरने वाले हर वक़्त अल्लाह के सामने सर झुकाने वाले हमेशा उसको याद करने वाले न्याय शील शासक थे उनके शासन काल में चारों ओर न्याय का चर्चा था उनके देश में अन्याय का कहीं नाम न था। उनका शासन इतना अच्छा इसलिए था क्योंकि उनको अल्लाह का एक आदेश प्राप्त था "ऐ दाऊद हमने तुमको ज़मीन पर हाकिम बनाया है सो लोगों में न्याय के साथ फ़ैसला करते रहना और भविष्य में भी कभी विषय वासना की पैरवी न करना (अगर

ऐसा करोगे तो) वो अल्लाह के रास्ते से भटका देगी जो लोग ख़ुदा के रास्ते भटकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब होगा। इस वजह कि वो रोज़े हिसाब को भूल रहे हैं।

अल्लाह की नेअ़मतें सुलैमान अलै० पर :

हज़रत सुलैमान अलै० के लिए अल्लाह तआ़ला ने हवा को उनके लिए वशीभूत कर दिया था। वो जिस तरफ को चाहते हवा उस तरफ चलती। उनकी राजगद्दी को और उनको उनके सैनिकों और फ़ौजियों को लेकर कहीं से कहीं मिन्टो सैकेण्डों में पहुंचा देती थी। अल्लाह ने बड़े–बड़े बलवान जिनों को उनका आज्ञाकारी बना दिया था। और बड़े–बड़े दुष्ट और पाखण्डी शैतानों को उनका अधीन कर दिया। ये शैतान और जिन्नात हज़रत सुलैमान अलै० के आदेशों को देश भर में लागू करते। और बड़ी बड़ी इमारतों का निर्माण करते ओर उनके लिए कालोनियां बसाते। जैसा कि अल्लाह ने कुर्आन में फ़रमाया है रोज़ाना चलने वाली हवा को सुलैमान अलै० के ताबे (वशीभूत) बना दिया था। वो हवा को उनके हुक्म से उस पवित्र भूमि की तरफ चलती । जिसमें हमने बरकत रखी है। (भूमि से मुराद मुल्क शाम) और हम हर चीज को जानते हैं। और बहुत से शैतान (जिन) ऐसे थे जो सुलैमान अ़लै० के लिए दरियाओं में ग़ोते लगाते थे ताकि मोती और क़ीमती सामान दरिया से निकाल कर लाएं। और वो शैतान इसके अलावा भी दूसरे काम किया करते थे और उन शैतानों को सम्भालने वाले हम ही थे।" और अल्लाह दूसरी जगह फ़रमाता है "सुलैमान अ़लै० के लिए हवा को मुसख़्ख़र कर दिया था उस हवा की सुबह की मंज़िल एक महीने भरके रास्ते के बराबर होती और उसके शाम का पड़ाव एक महीने भर के राह के बराबर होती। और हमने उनके लिए तांबे का चश्मा (स्रोत) बहा दिया, और जिन्नात में कुछ वो थे जो उनके सामने काम करते उनके रब के हुक्म से और उनमें से जो भी हमारे इस हुक्म पर अ़मल न करेगा हम उसको आख़िरत में दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखा देंगें। वो जिन्नात उनके लिए वो चीजें बनाते जिनके बनवाने की उन्हें इच्छा होती। बड़ी–बड़ी देंगे जो एक ही जगह जमी रहें। ऐ दाऊद के खानदान वालो तुम सब शुक्रिये में नेक काम किया करो और मेरे बन्दों में शुक्र करने वाले कम ही होते हैं ।"

सुलैमान अ़लै० की सूझबूझ और उनका गहरा ज्ञान

उनकी बुद्धिमानी और सही फैसले की ताक़त उस वक्त जाहिर हुई जब एक मुकदमा उनके महान पिता की अदालत में पेश हुआ। कुछ लोग थे जिनके अंगूर में गुच्छे आ गए थे। तो दूसरे किसानों की बकरियों उसमें दाखिल हो गईं। बकरियों ने सारे बाग को तहस नहस कर दिया । दाऊद अलै० ने फैसला सुनाया कि बकरियां बाग़ वाले को दे दी जाएं। उस वक्त हज़रत सुलैमान ने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी इस समस्या का दूसरा समाधान भी मुमकिन है दाऊद अ़लै० ने कहा वह हल कौन सा है ? सुलैमान अ़लै० ने कहा कि बाग़ बकरी वाले को दे दिया जाए वह उसकी देख रेख करके फिर से पहले की हालत पर ले आए और बकरियां बाग वाले को देदी जाएं। ताकि वह उससे अपनी हानि का भुगतान कर सके फिर जब बाग अपनी सही हालत पर आ जाए तो बाग वाले को लौटा दिया जाए और बकरियां बकरी वाले को लौटा दी जाए।

इस तरह अल्लाह ने सुलैमान अलै० को एक सच्ची और अच्छी सूझ–बूझ और गहरे ज्ञान के लिए चुन लियाथा। और अल्लाह ने कुरआन में उनकी तारीफ फरमायी है। और दाऊद और सुलैमान अ़लै० (की कहानी सुनाइए) जबकि दोनों किसी खेत के बारे में फैसला करने लगे उस खेत में कुछ लोगों की बकरियां रात के वक्त घुस गई और उसको चर गईं। हम उस फैसले को जो लोगों के बारे में हुआ था देख रहे थे सो हमने इस फैसले की समझ सुलैमान को दे दी और हमने दोनों को ज्ञान और बुद्धि प्रदान की थी।"

सुलैमान अ़लै० पक्षियों और पशुओं की ज़बान के ज्ञानी :

कुरआन ने हिकमत, ज्ञान, और बुद्धि से भरा एक किस्सा सुनाया जिससे सुलैमान अलै० की शासनिक तदबीर और उनकी शाहाना शानोशौकत और बादशाही रोब व दबदबा ज़ाहिर होता है। इस किस्से से ये भी प्रकाशित होता है कि किस तरह अल्लाह ने उनको लोक–परलोक की सुयोग्यता दी। और किस प्रकार से उनको राज पाठ के साथ–साथ नबूवत और धार्मिक मिशन दिया वो पशु–पक्षियों की बोली जानते थे अल्लाह ने उनकी सेना में देवों मनुष्यों और विभिन्न प्रकार के पक्षियों को एकत्र कर दिया था और उन सैनिकों पर उनका पूरा दबदबा था वे सारे उनके शानदार प्रबन्ध में

थे एक बार सुलैमान अ़लै० का गुज़र चीटियों की घाटी में हुआ जहां बहुत सारी चीटियां अपने ख़ानदानों के साथ रहती थीं चीटियों की रानी भयभीत हो गई कि कहीं घोड़े उनको कुचल न दें। और उनके कबीले की बरबादी का सुलैमान अ़लै० और उनकी सेना को एहसास (चेतना) भी न हो। तो चीटियों की रानी ने चीटियों को अपने–अपने बिलों में घुस जाने को कहा। उनकी ये बातें सुलैमान अ़लै० समझ गए लेकिन उनकोइस पर कोई घमण्ड और गर्व नहीं हुआ इसलिए कि वो अल्लाह के नबी थे। तारीफ़ और उसकी इस नेअ़मत पर शुक्रऔर सत्य कर्म की तौफ़ीक पर उभारा कि अल्लाह उनको अपने नेक बन्दों की कड़ी में शामिल कर ले।

हुद हुद की कथा –

सुलैमान अ़लै० के फौजियों में हुदहुद नामी एक पक्षी उनकी फौज का जाजूस था वह पानी की जगहों की खोज किया करता था और फौज के पड़ाव का स्थान नियन्त्रित करता था एक दिन सुलैमान अ़लै० ने उसे अनुपस्थित पाया आप को बड़ा क्रोध आया और आपने उसको चेतावनी दी लेकिन थोड़ी ही देर के बाद वह उपस्थित हो गया और सुलैमान अलै० से कहने लगा कि मेरे पास ऐसी सूचना है जो न आप को मालूम है न आप की सेना को। मैं मुल्के सबा और उसकी रानी के बारे में एक सच्ची सूचना लेकर आया हूं। उनको ईश्वर ने विशाल देश और भारी संख्या में धनराशि दी है। लेकिन इस बुद्धिमानी, देश और शासन के बावजूद मैंने उनको बेवकूफ और जाहिल ही पाया इसलिए कि वह अल्लाह को छोड़ कर सूर्य की पूजा कर रहे हैं और इस चीज़ को वो समझते भी नही हैं और न वह एक अल्लाह की इबादत की तरफ आते हैं।

सबा की रानी को इस्लाम की दावत :

अल्लाह के नबी सुलैमान अलै० को ये बात बहुत बुरी लगी कि उनके पड़ोसी देश में एक ऐसी क़ौम रहती है जिसको वो जानते ही नहीं और अब तक उस मुल्क के वासियों के पास सच्चा इस्लाम धर्म नहीं पहुंच सका है। और अभी तक वह सूर्य पूजन में लगे हुए हैं। इस बात से उनकी दीनी स्वाभिमानता और नबवी ग़ैरत जोश में आ गई। उन्होंने विचार के बाद बेहतर ये समझा कि उस मुल्क पर सैनिक आक्रमण से पहले उसकी मुशरिक रानी को एक दावती पत्र लिखें और उसको इताअ़त और फ़रमाबरदारी कुबूल करने का आदेश दें तो उन्होंने रानी को एक बहुत ही तत्वपूर्ण और सुभाषी पत्र जिसमें उन्होंने रानी को इस्लाम स्वीकार करने की दावत दी। इस पत्र में नर्मी और गर्मी, प्रतिष्ठा, गम्भीरता का सुन्दर मिलाव था। जिसमें नबियों वाली नम्रता और बादशाहों वाली स्वाभिमान और प्रकोप था।

तरावीह़ की रकअ़तें

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तीन दिन नमाज़े तरावीह़ जमाअ़त से पढ़ी, चौथे दिन हुजरे से बाहर नहीं निकले और सह़ाबा से फ़रमाया कि मुझे डर हुआ कि कहीं यह तुम पर फ़र्ज़ न कर दी जाये। इन तीनों दिनों की रकअ़तों में सह़ाबा मे मतभेद हो गया । परन्तु ह़ज़रत उमर (रज़ि०) ने अपने शासन काल में २० रकअ़त से जमाअ़त पढ़ने पढ़ाने की व्यवस्था की तो सारे सहाबा सहमत हुए।

अतः इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम शाफ़ओ़ी और इमाम अह़मद बिन ह़ंबल ने २० रकअ़तें अपनाईं। कुछ सह़ाबा से ८ रकअ़तें भी साबित हैं अह़ले ह़दीस लोग ८ रकअ़त तरावीह़ पढ़ते है।

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :

FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :

Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

समाज सुधार

हर संस्कृति के जीवित रहने के हक़ को स्वीकार कर लिया जाये

डॉ० मुख्तार अहमद अंसारी

हिन्दुस्तान के राजनीतिक माहौल में हिन्दुओं और मुसलमानों में मतभेद से अधिक कोई चीज़ शर्मनाक नहीं, जान व माल की तबाही और घातक हमलों की निन्दा में कोई बोल अधिक कठोर नहीं हो सकते। शायद ही ऐसा कोई दिन गुजरता होगा कि जब हम देश के किसी न किसी भाग में इस भयावह घटना की खबर न सुनते हों। यह घटनायें अपने पीछे नफ़रत और कटुता की ऐसी भावनायें छोड़ जाती हैं जो देश की उन जुझारू गिराहों के बड़े भारी कैम्प में बांट देने की धमकी देती है कि जो एक दूसरे को तबाह करने पर उधार खाये बैठे हों।

हिन्दू–मुस्लिम मतभेद को दूर करते हुए हमें इस बीमारी के लक्षण का गलत अन्दाज़ा नहीं लगाना चाहिए। यही राजनीतिक और धार्मिक मतभेद जिन्होंने दो कौमों के सम्बन्धों को नागवार (अप्रिय) बना रखा है, उस गहरी खींचतान का वाह्य स्वरूप है जो हिन्दुस्तान के लिए खास अजूबा या इतिहास के लिए नयी घटना नहीं। यह वास्तव में दो विभिन्न संस्कृतियों (कलचर्स) की समस्या है जो जीवन के प्रति अपना विशेष दृष्टिकोण रखती है। इस का बेतहतरीन हल यह है कि हर संस्कृति के जीवित रहने के हक को स्वीकार कर लिया जाये। एक दूसरे के साथ उदारता और इज़्ज़त की स्प्रिट को जागृत किया जाये। और ऐसी राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना से सांस्कृतिक सदभाव और मेल मिलाप को बढ़ावा देने के काम को प्रोत्साहन दिया जाये जिन में दोनों कौमों के बच्चे एक दूसरे के साथ मिलें जुलें और दोनों सभ्यताओं की तह में मौजूद परिकल्पनाओं को समझने और अध्ययन करने के अवसरों से लाभान्वित हों। शिक्षित देशवासियों को पाश्चात् सभ्यता के अध्ययन पर मजबूर किया जाता है, मगर वह उन लोगों की सभ्यता से लगभग कोरा होता है जो उसके घर के पास पड़ोस में रहते हैं। यह समय है कि हमें इस खतरनाक अलगाव और महान अज्ञानता का किस्सा पाक कर देना चाहिए। एक दूसरे की गहरी भावनाओं के ज्ञान और एक दूसरे की परिकल्पनाओं के लिए हमदर्दी की भावना से साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की समस्यायें बीते दिनों की दास्तान बन जायेंगी। .....

(सन् १९२७ के एक अध्यक्षीय भाषण से उद्धरित)

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी

महंगा पड़ा तोहफ़ा

सऊदी अरब के शाह फ़हद से तोहफ़े में मिले ६ अरबी घोड़ों का लालन–पालन आस्ट्रिया के राष्ट्रपति थॉमस क्लेस्टिल को इतना महंगा साबित हो रहा है कि उनका बजट ही गड़बड़ा गया है। एक स्थानीय दैनिक में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, क्लेस्टिल अपने करीबी लोगों से यह कहते सुने गये हैं कि ये घोड़े मुझे मंहगे पड़ रहे हैं। अखबार के अनुसार, इन घोड़ों को वियना के बाहर किसी अस्तबल में रखा गया है। प्रत्येक घोड़े के खान पान और वर्जिश के लिए प्रतिमाह ५०० यूरो खर्च हो रहे हैं, अखबार के अनुसार, आयकर, पेशन की भागीदारी, पहली तलाकशुदा पत्नी को दिये जाने वाले ४५००यूरो के भत्ते के बाद राष्ट्रपति के पास केवल २६०० यूरो ही बचते हैं जबकि घोड़ों के लिए उन्हें ३००० यूरो की आवश्यकता है।

वफ़ादार कंगारू

कुत्तों की वफ़ादारी के किस्से तो बहुत सुनने में आते हैं लेकिन इस मामले में कंगारू भी कुछ कम नहीं। ऐसा ही एक वफादार कंगारू 'लु लु' पेड़ के नीचे दबे अपने अचेत मालिक की जान बचाकर "नायक" बन गया। लियोनार्द रिचर्ड्स नाम के एक किसान के ऊपर पेड़ की एक भारी शाखा टूट कर आ गिरी।

रिचर्ड वहीं अचेत हो गया लेकिन लु लु चौकस था। लु लु तब तक चिल्लाता रहा जब तक रिचर्ड्स की पत्नी उस स्थान तक नहीं पहुंच पायी। रिचर्ड्स के १६ वर्षीय पुत्र ल्यूक ने बताया कि जब उसकी मां वहां पहुंची तो उसके पिता पेड़ की भारी शाखा के नीचे दबे पड़े थे। उन्हें सिर पर चोट आयी थी। रिचर्ड्स को तत्काल असपताल ले जाया गया। जहां से विगत रविवार को उन्हें छुट्टी दे दी गयी। ल्यूक ने कहा कि उसके पिता खेत में घंटो तक रहते थे यदि लु लु सही समय पर परिवार को चौकस नहीं करता तो जाने क्या हो जाता।